इग्नू
जन जन का
विश्वविद्यालय

सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

BANC-108
संस्कृति और समाज के सिद्धांत

BANC-108

संस्कृति और समाज के सिद्धांत

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

विशेषज्ञ समिति

प्रोफेसर एस. एम. पटनायक
मानवविज्ञान विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय
पूर्व कुलपति, उत्कल
विश्वविद्यालय, ओडिशा

डॉ सुनीता रेड्डी
एसोशिएट प्रोफेसर, सोशल
मेडिसिन एंड कम्युनिटी हेल्थ,
स्कूल ऑफ सोशल साइंस,
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली

प्रो. रश्मि सिन्हा,
मानवविज्ञान संकाय,
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ,
इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. के. अनिल कुमार,
सहायक प्रोफेसर,
मानवविज्ञान संकाय,
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ,
इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. रूखशाना जमान,
सहायक प्रोफेसर, मानवविज्ञान
संकाय, सामाजिक विज्ञान
विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. मीतू दास, सहायक
प्रोफेसर, मानव विज्ञान संकाय,
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ,
इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. पी. वेंकटरमणा, सहायक
प्रोफेसर, मानवविज्ञान संकाय,
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ,
इग्नू, नई दिल्ली

पाठ्यक्रम निर्माण

खंड	इकाई लेखक
खंड 1 मानवविज्ञान का उदय	
इकाई 1 विकासवाद	डॉ.रूखशाना जमान,सहायक प्रोफेसर, मानवविज्ञान संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली एवं प्रोफेसर शिवा प्रसाद, मानवविज्ञान विभाग (सेवानिवृत्त), हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद
इकाई 2 प्रसारवाद	प्रोफेसर नीता माथुर, समाजशास्त्र संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली
इकाई 3 संस्कृति क्षेत्र के सिद्धांत	डॉ. इंद्राणी मुखर्जी पोस्ट–डॉक्टोरल फेलो, मानवविज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
खंड 2 क्षेत्रकार्य (फील्डवर्क) परंपरा का उदय	
इकाई 4 ऐतिहासिक विशिष्टतावाद और तुलनात्मक पद्धति की आलोचना	डॉ. इंद्राणी मुखर्जी पोस्ट–डॉक्टोरल फेलो, मानवविज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
इकाई 5 अमेरिकी सांस्कृतिक परंपरा	डॉ. गुंजन अरोड़ा, पोस्ट–डॉक्टोरल फेलो, सेंटर ऑफ सोशल मेडिसिन एंड कम्युनिटी हेल्थ, स्कूल ऑफ सोशल साइंसेज, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
इकाई 6 सांस्कृतिक भौतिकवाद	डॉ. चंदना शर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर, मानवविज्ञान विभाग, कॉटन युनिवर्सिटी, गुवाहाटी, असम
खंड 3 सामाजिक संरचना और प्रकार्य के सिद्धांत	
इकाई 7 सामाजिक एकीकरण	डॉ. प्रशांत खत्री, सहायक प्रोफेसर, मानव विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज
इकाई 8 प्रकार्यवाद (कार्यात्मकता) और संरचनात्मक–प्रकार्यवाद	प्रो. सुभद्रा मित्रा चन्ना, पूर्व प्रोफेसर मानव विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
इकाई 9 संरचनावाद	डॉ. प्रशांत खत्री, सहायक प्रोफेसर, मानवविज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज
इकाई 10 संघर्ष सिद्धांत	डॉ. शुभांगी वैद्य, एसोसिएट प्रोफेसर, स्कूल ऑफ इंटर–डिसिप्लिनरी एंड ट्रांस–डिसिप्लिनरी स्टडीज, इग्नू, नई दिल्ली

खंड 4 समकालीन सिद्धांत	
इकाई 11 प्रतीकात्मक और व्याख्यात्मक दृष्टिकोण	प्रो. सुभद्रा मित्रा चन्ना, पूर्व प्रोफेसर मानव विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्याल, दिल्ली
इकाई 12 नारीवाद	प्रो. सुभद्रा मित्रा चन्ना, पूर्व प्रोफेसर मानव विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्याल, दिल्ली
इकाई 13 नव नृवंशविज्ञान (एथ्नोग्राफी) और समकालीन परिवर्तन	डॉ. क्वीनबाला मारक, एसोसिएट प्रोफेसर, मानवविज्ञान विभाग, नार्थ–इस्ट हिल युनिवर्सिटी (नेहु), मेघालय
व्यावहारिक निर्देशिका	प्रो. सुभद्रा मित्रा चन्ना, पूर्व प्रोफेसर मानव विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्याल एवं डॉ. रूखशाना जमान, सहायक प्रोफेसर, मानवविज्ञान संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

पाठयक्रम समन्वयक : डॉ. रूखशाना जमान, सहायक प्रोफेसर, मानवविज्ञान संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू नई दिल्ली

कार्यक्रम समन्वयक : डॉ. रूखशाना जमान, सहायक प्रोफेसर, मानवविज्ञान संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू नई दिल्ली

सामग्री संपादन : प्रो. सुभद्रा मित्रा चन्ना, पूर्व प्रोफेसर मानवविज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्याल; डॉ. पंकज उपाध्याय, एवं डॉ. स्मारिका अवस्थी शर्मा, अकादमिक परामर्शदाता, मानवविज्ञान संकाय, इग्नू, नई दिल्ली

अनुवादक : निधु कुमारी, फ्रीलांसर, दिल्ली

पुनरीक्षण : डॉ. कुमकुम श्रीवास्तव, पूर्व एसोशियट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, जानकी देवी मेमोरियल कालेज,दिल्ली

कवर डिजाइन : डॉ. ब्रोतोती राय, एसोसिएट प्रोफेसर, जीव विज्ञान विभाग, मैत्रेयी कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।

अकादमिक परामर्शदाता : डॉ. पंकज उपाध्याय, अकादमिक परामर्शदाता, मानवविज्ञान संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू नई दिल्ली

डॉ. स्मारिका अवस्थी शर्मा, अकादमिक परामर्शदाता, मानवविज्ञान संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू नई दिल्ली

मुद्रण प्रस्तुति

श्री राजीव गिरधर
सहायक कुलसचिव (प्रकाशन)
सामग्री निर्माण एवं वितरण विभाग, इग्नू

श्री हेमन्त परीदा
अनुभाग अधिकारी (प्रकाशन) सामग्री निर्माण
एवं वितरण विभाग, इग्नू

अगस्त, 2021

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2021

ISBN:

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस सामग्री के किसी भी अंश को इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में मिमियोग्राफी (चक्र मुद्रण) द्वारा अथवा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों के विषय में अधिक जानकारी विश्वविद्यालय के कार्यालय, मैदान गढ़ी नई दिल्ली-110068 से अथवा इग्नू की आधिकारिक वेबसाइट www.ignou.ac.in से प्राप्त की जा सकती है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से निदेशक, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ द्वारा मुद्रित और प्रकाशित ।

लेज़र टाइप सेट- टेसा मीडिया एण्ड कंप्यूटर्स

मुद्रण -

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

विषय सूची

		पृष्ठ संख्या
खंड 1	**मानवविज्ञान का उदय**	**11**
इकाई 1	विकासवाद	13
इकाई 2	प्रसारवाद	28
इकाई 3	संस्कृति क्षेत्र के सिद्धांत	41
खंड 2	**क्षेत्रकार्य (फील्डवर्क) परंपरा का उदय**	**55**
इकाई 4	ऐतिहासिक विशिष्टतावाद और तुलनात्मक पद्धति की आलोचना	57
इकाई 5	अमेरिकी सांस्कृतिक परंपरा	70
इकाई 6	सांस्कृतिक भौतिकवाद	85
खंड 3	**सामाजिक संरचना और प्रकार्य के सिद्धांत**	**97**
इकाई 7	सामाजिक एकीकरण	99
इकाई 8	प्रकार्यवाद (कार्यात्मकता) और संरचनात्मक–प्रकार्यवाद	113
इकाई 9	संरचनावाद	128
इकाई 10	संघर्ष सिद्धांत	141
खंड 4	**समकालीन सिद्धांत**	**157**
इकाई 11	प्रतीकात्मक और व्याख्यात्मक दृष्टिकोण	159
इकाई 12	नारीवाद	174
इकाई 13	नव नृवंशविज्ञान (एथ्नोग्राफी) और समकालीन परिवर्तन	190
व्यावहारिक निर्देशिका		**205**
सुझावित पाठ्य अध्ययन		**221**

पाठ्यक्रम परिचय

संस्कृति और समाज के सिद्धांत उन सैद्धांतिक दृष्टिकोणों को केंद्र में रखते हैं जिन्होंने समाज और संस्कृति के अध्ययन में सहायता की है। पाठ्यक्रम पारंपरिक सिद्धांतों को देखता है और उन विचारकों के योगदान को चित्रित करता है जो समाज और संस्कृति के विकास से संबधित थे और जिन्होंने यह पता लगाया कि यह कैसे प्रसार के माध्यम से अन्य स्थानों पर चला गया। यह ऐतिहासिक विशिष्टतावाद को एक दृष्टिकोण के रूप में दर्शाता है जो दूसरों के साथ तुलना करने के बजाय अपने स्वयं के लिए एक समाज या संस्कृति का अध्ययन करने के महत्व को रेखांकित करता है और सांस्कृतिक विकास और सापेक्षता के समकालीन मानवशास्त्रीय सिद्धांतों पर आगे बढ़ता है। समकालीन सिद्धांतों के दायरे में; व्याख्यात्मक मानवविज्ञान, उत्तर–आधुनिकतावाद, उत्तर–नारीवाद और उत्तर–उपनिवेशवाद को लिया गया है। सैद्धांतिक प्रतिमान और बहस; मानवशास्त्रीय व्याख्या के रूप; मानवविज्ञान के अभ्यास में सिद्धांत की भूमिका इस पाठ्यक्रम का सार हैं।

पाठ्यक्रम की आवश्यकता : यह पाठ्यक्रम चौथे सेमेस्टर में मानवविज्ञान कार्यक्रम में बैचलर ऑफ साइंस (ऑनर्स) के शिक्षार्थियों के लिए मुख्य पाठ्यक्रमों में से एक है जिसमें चार क्रेडिट सिद्धांत और व्यावहारिक नियमावली के दो क्रेडिट शामिल हैं। मूल्यांकन प्रक्रिया में सिद्धांत और व्यावहारिक घटक के आधार पर दिए गए नियत कार्य, अवधि और परीक्षा का अंकन शामिल होगा।

अध्ययन के लाभ या परिणाम

इस पाठ्यक्रम को पढ़ने के बाद, आप निम्नलिखित के लिए सक्षम होंगे:

- पारंपरिक सिद्धांतों पर चर्चा और उनकी व्याख्या करने में;
- ऐतिहासिक विशिष्टतावाद और सांस्कृतिक सापेक्षवाद के सिद्धांत पर विचार–विमर्श कर सकेंगे ;
- समकालीन सिद्धांतों पर विर्मश कर पाएंगे; तथा
- सामाजिक और सांस्कृतिक मानवविज्ञान के अध्ययन में सिद्धांतों की भूमिका का विश्लेषण कर सकेंगे।

पाठ्यक्रम प्रस्तुति

पाठ्यक्रम सामग्री में चार खंड और एक व्यावहारिक नियमावली शामिल है। प्रत्येक खंड में विषयगत रूप से व्यवस्थित इकाइयाँ हैं। कुल मिलाकर तेरह इकाइयाँ और एक व्यावहारिक नियमावली है। आइए अब देखें कि हमने प्रत्येक खंड में क्या चर्चा की है।

खंड 1 : मानवविज्ञान का उदय

खंड एक में तीन इकाइयाँ हैं जो मानवशास्त्रीय विचारों के उद्भव से संबंधित हैं। यह खंड इस बात को ध्यान में रखता है कि मानवविज्ञान में सिद्धांत का विकास, विषय के ऐतिहासिक विकास से कैसे जुड़ा है। पहली इकाई, **विकासवाद** में, हम शिक्षार्थियों को इस बात से परिचित कराते हैं कि मानवविज्ञान में प्रारंभिक विचारकों ने विकास और समाज और संस्कृति में परिवर्तन के प्रश्न को विकासवाद पर अपने दृष्टिकोण के

माध्यम से कैसे देखा। इस बात पर जोर दिया जाता है कि कैसे आरंभ में, प्रश्न मानव की विविधता और विकास की व्याख्या करने से संबंधित थे, और बाद में कैसे दोनों जैविक और सांस्कृतिक रूप से, एक बार जब दैवीय सृजन का प्रतिमान प्राकृतिक सृजन और विकास में से एक में बदल गया। एकरेखीय विकास, सार्वभौमिक विकास, मानव जाति की मानसिक एकता, संस्कृति के अस्तित्व, संस्कृति समानताएं, विकास की एक पंक्ति, जटिलता की सादगी जैसी विकास के लिए प्रमुख अवधारणाएं और बुनियादी आधार, जो मानवविज्ञानी द्वारा प्रतिपादित किए जा रहे थे, पर यहां चर्चा की गई है। नव–विकासवाद के उदय के साथ–साथ बाद के मानवविज्ञानियों द्वारा विकासवाद पर की गई आलोचना भी इस इकाई का एक हिस्सा है। दूसरी इकाई **विसरणवाद** प्रसार की अवधारणा से संबंधित है कि कैसे मानवविज्ञानी द्वारा एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में सांस्कृतिक लक्षणों के प्रसार की व्याख्या करने के लिए इसका अध्ययन किया गया है। यह इकाई विसरण की आवश्यक विशेषताओं को भी रेखांकित करती है और प्रसार और संस्कृतिकरण के बीच अंतर करती है। विसरणवाद की जांच करने वाले विचारों के स्कूल: ब्रिटिश, जर्मन और अमेरिकी स्कूलों को भी इस इकाई में आलोचनात्मक रूप से देखा गया है। तीसरी इकाई **संस्कृति क्षेत्र** सिद्धांतों पर संस्कृति क्षेत्र अवधारणा के ऐतिहासिक, सैद्धांतिक और पद्धतिगत महत्व की खोज करती है और विभिन्न विद्वानों के योगदान की व्याख्या करती है जिनके कार्यों ने अवधारणा को प्रभावित किया, संस्कृति क्षेत्र सिद्धांतों का निर्माण किया। यह इकाई आलोचनात्मक रूप से यह भी आकलन करती है कि संस्कृति क्षेत्र की अवधारणा ने अपना महत्व क्यों खो दिया।

खंड 2 : क्षेत्रकार्य परंपरा का उदय

यह खंड मानवशास्त्रीय सिद्धांतों और विचारों में एक महत्वपूर्ण प्रतिमान बदलाव से संबंधित है। यह चरण मानवशास्त्रीय विचारों से संबंधित है जो प्रत्यक्ष आंकड़े एकत्र करने की अवधारणा पर आधारित थे। मानवविज्ञानी पुराने स्रोतों से आंकड़े एकत्र करने के दायरे से बाहर निकल गए हैं और 'आर्म चेयर' मानवविज्ञानी' होने की अपनी पहचान को छोड़ दिया है। हम इस खंड की शुरुआत **ऐतिहासिक विशिष्टतावाद और तुलनात्मक पद्धति की आलोचना** पर अपने पाठ्यक्रम की चौथी इकाई से करते हैं। यहाँ उद्देश्य यह समझना है कि फ्रांज बोआस तुलनात्मक पद्धति की आलोचना क्यों करते हैं। हम विशिष्ट समुदायों की संस्कृति को समग्र रूप से समझने के लिए उनके द्वारा प्रस्तावित विभिन्न अवधारणाओं पर गौर करते हैं। हम सांस्कृतिक सापेक्षवाद की अवधारणा को चित्रित करते हैं और यह भी जानने की कोशिश करते हैं कि बोआस ने आंकड़े एकत्र करने के लिए क्षेत्रकार्य पर जोर क्यों दिया। अंत में, हम उन कारणों का पता लगाते हैं जिन कारणों से बोसियन विचारों की अन्य विद्वानों द्वारा आलोचना की गई थी। अगली इकाई में हम **अमेरिकी सांस्कृतिक परंपराओं** पर, संस्कृति और व्यक्तित्व स्कूल में प्रमुख अवधारणाओं के साथ–साथ वृद्धि और विकास को समझने की कोशिश करते हैं। यह स्कूल मूल रूप से संस्कृति और व्यक्तित्व के बीच अंतर–संबंधों और इस बात पर कि कैसे एक संस्कृति एक समूह के व्यक्तित्व को आकार दे सकती है, जिससे राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण होता है, पर केन्द्रित था। इस खंड की अगली इकाई **सांस्कृतिक भौतिकवाद**, नव–विकासवादियों के कार्यों को देखती है जिन्होंने विकासवाद सिद्धांत पर दोबारा गौर किया। यहां, हम संस्कृति के वैचारिक आधार से प्राथमिक ध्यान के बदलाव को देखते हैं कि मानव व्यवहार को निर्धारित करने में भौतिकता और पर्यावरणीय परिस्थितियां प्राथमिक कैसे हैं।

सांस्कृतिक पारिस्थितिकी में अध्ययन इस दृष्टिकोण के अध्ययन के एक बहुत ही प्रासंगिक क्षेत्र के रूप में उभरा।

खंड 3 सामाजिक संरचना और प्रकार्य के सिद्धांत

मानवविज्ञान अध्ययनों में प्रतिमान बदलाव, जो मानवविज्ञानी के क्षेत्र में आने के साथ शुरू हुआ था, ने इसे मानवविज्ञान में एक प्रमाणिकता के रूप में संस्थागत पहचान दिया। मालिनोवस्की ने लंबे समय तक विस्तारित क्षेत्र कार्य के लिए प्रवृत्ति निर्धारित की। उन्होंने लगभग उनतीस महीने ट्रोब्रिएंड द्वीपवासियों के बीच बिताए, स्थानीय भाषा सीखी और संस्कृति को एक उदार दृष्टिकोण से समझने पर ध्यान केंद्रित किया। इस चरण में मानवविज्ञानियों का ध्यान संस्कृति के विभिन्न पहलुओं की संरचना और कार्यों की ओर आकर्षित हुआ। इस खंड में इकाई–7 **सामाजिक एकीकरण;** सामाजिक अनुबंध के सिद्धांत की शुरुआत की अवधारणा को देखता है। अगस्टे कॉम्टे और हर्बर्ट स्पेंसर के पहले के कार्यों का पता लगाते हुए, यह सामाजिक एकीकरण और सामाजिक मानवविज्ञान में इसके प्रभाव पर दुर्खीम के विचारों पर आगे बढ़ता है। यह इकाई सामाजिक विघटन और विसंगति की अवधारणाओं को भी चित्रित करने का प्रयास करती है। अगली इकाई, **प्रकार्यवाद और संरचनात्मक–कार्यात्मकता** की उत्पत्ति, उनके उद्भव और विकास की पड़ताल करती है। रैडक्लिफ–ब्राउन के संरचनात्मक–कार्यात्मक सिद्धांत का विश्लेषण यह समझने के लिए किया गया है कि यह मालिनोवस्की के प्रकार्यवाद से कैसे भिन्न है। इकाई 9 **संरचनवाद** में इस सिद्धांत की उत्पत्ति पर चर्चा की गई है। इस सिद्धांत का जोर इस तथ्य में निहित है कि यह सिद्धांत एक समाज के भीतर संरचनाओं के गहरे अर्थों और वह कैसे एक पहलू दूसरे से जुड़े हुए हैं पर ध्यान देने के बजाए संस्कृति की समझ के बाहर चला गया। इस इकाई में क्लॉउड लेवी–स्ट्रॉस के योगदान की चर्चा के साथ साथ एडमंड लीच के नव–संरचनावाद की अवधारणा के कार्य की चर्चा भी की गई है। इस खंड की अंतिम इकाई 10 **'संघर्ष सिद्धांत'** मैनचेस्टर स्कूल के विचारों और सामाजिक मानवविज्ञान में संघर्षों की समझ में मार्क्सवादी सिद्धांत के उपयोग को प्रस्तुत करती है। सामाजिक संघर्षों और ग्लुकमैन और कुछ अन्य कार्यों से जुड़े सामाजिक परिवर्तन के बारे में उभरती अवधारणाएं और विचार इस इकाई का एक हिस्सा होंगे।

खंड 4 : समकालीन सिद्धांत

समकालीन सिद्धांत, इस पाठ्यक्रम के सिद्धांत खंड का अंतिम खंड है। इस खंड में तीन इकाइयाँ हैं जो समाज और संस्कृति के अध्ययन में नए सैद्धांतिक दृष्टिकोण के संबंध में विकसित हुए नए प्रतिमानों को देखती हैं। **इकाई 11** मानव संस्कृति में प्रतीकात्मक व्यवहार की उत्पत्ति और विकास से संबंधित है। यह मैरी डगलस, विक्टर टर्नर, शेरी ऑर्टनर और क्लिफोर्ड गिर्ट्ज जैसे मानवविज्ञानी के कार्यों को ध्यान में रखता है जिन्होंने मानवशास्त्रीय विचारों में प्रतीकात्मक और व्याख्यात्मक परिप्रेक्ष्य स्थापित किया है। एक श्वेत व्यक्ति के अध्ययन के क्षेत्र के रूप में मानवविज्ञान ने अपनी स्थापना के बाद से एक पुरुष दृष्टिकोण से विश्वदृष्टि को देखा था। यह केवल मार्गरेट मीड, रूथ बेनेडिक्ट, कोरा डूबॉइस, एनेट वेनर, रुबिन गेल, शेरी ऑर्टनर आदि के कार्यों के कारण इस क्षेत्र में महिलाओं की उपस्थिति दर्ज की गई थी। इस प्रकार, मानवशास्त्रीय अध्ययनों में नारीवादी दृष्टिकोण का प्रवेश बहुत देर से हुआ। **इकाई 12** मानवशास्त्रीय विचार और लेखन में नारीवादी दृष्टिकोण के प्रभाव को देखती है। इस खंड की अंतिम इकाई अर्थात इकाई 13 नए नृवंशविज्ञान के साथ आए नए प्रतिमानों और समकालीन परिवर्तनों पर एक नजर डालती है। यह इकाई नए प्रकार

के नृवंशविज्ञानों जो सामने आ रहे हैं और वे पुरानी पारंपरिक नृवंशविज्ञान शैली से कैसे भिन्न हैं पर केंद्रित है।

व्यवहारिक नियमावली

नियमावली सिद्धांत की समझ को प्रस्तुत करता है और सिद्धांत की प्रासंगिकता और यह नृवंशविज्ञान अध्ययन के भीतर कैसे स्थित है, को चित्रित करता है। यह नियमावली शिक्षार्थियों को उनके विषयों का चयन करने और विषय को सही ठहराने के लिए एक सिद्धांत चुनने के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करेगा। सैद्धांतिक भाग को विस्तार से समझाया गया है और शिक्षार्थी के लिए विकल्प खुला छोड़ दिया गया है कि वह अपने विषय के लिए चुने गए सिद्धांत को प्रतिबिंबित और न्यायोचित ठहरा सके।

आइए अब हम आपको इकाइयों के बारे में बताते हैं। यदि आप समझते हैं कि इकाइयों का अध्ययन कैसे किया जाए और पाठ्यक्रम सामग्री को व्यवस्थित तरीके से कैसे पढ़ा जाए तो आप एक शिक्षार्थी के रूप में लाभान्वित होंगे। जैसा कि हमने पहले ही कहा है कि खंड विषयगत रूप से विभाजित हैं, इसलिए, एक शिक्षार्थी को सलाह दी जाती है कि वे विषयों के संदर्भ में इकाइयों को एक क्रम में पढ़ें ताकि वे दो इकाइयों के बीच की कड़ी को जोड़ने और समझने में सक्षम हों। यदि आप बेतरतीब ढंग से पढ़ते हैं, तो आपको अवधारणाओं और परिभाषाओं को समझना मुश्किल हो सकता है, और इकाई का सूत्र खो सकता है। सुविधाजनक पढ़ने और बेहतर समझ के लिए, इकाइयों को अनुभागों और उप–अनुभागों में विभाजित किया गया है। प्रत्येक अनुभाग को मोटे और बड़े अक्षरों द्वारा और प्रत्येक उप–अनुभाग को मोटे और छोटे अक्षरों द्वारा स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है। उप–अनुभाग के भीतर महत्वपूर्ण विभाजन अभी भी छोटे और मोटे अक्षरों में हैं ताकि आपके लिए उप–अनुभागों के भीतर उनका स्थान देखना आसान हो सके। जिन बिंदुओं पर प्रकाश डालने की आवश्यकता है, उन्हें क, ख, ग इत्यादि के रूप में दर्शाया गया है। एकरूपता के लिए, हमने पूरे पाठ्यक्रम में प्रत्येक इकाई में एक ही योजना को नियोजित किया है। प्रत्येक इकाई 'उद्देश्य' से शुरू होती है जो एक शिक्षार्थी को समझाती है कि:

क) हम इकाई में क्या प्रस्तुत करेंगे, और

ख) एक बार जब छात्र इकाई पर काम कर लेता है तो हम उससे क्या उम्मीद करते हैं।

प्रत्येक खंड के बाद हमने 'अपनी प्रगति जाँचे' दिया है, जो शिक्षार्थी को स्वयं जाँचने में मदद करेगा कि क्या वे अनुभाग में विषय वस्तु को समझने में सक्षम हैं। अपनी प्रगति की जाँच का उद्देश्य शिक्षार्थी को प्रत्येक इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों के साथ अपने उत्तरों की तुलना करने में सक्षम बनाना है। दिए गए स्थान में अपने उत्तर लिखने से पहले कृपया उत्तरों को न देखें। शिक्षार्थी पेंसिल से उत्तर लिख सकते हैं, ताकि अभ्यास घटक के रूप में इसे फिर से मिटाया और फिर से लिखा जा सके। लंबे उत्तरों के लिए संकेत दिए गए हैं, उत्तर नहीं दिए गए हैं ताकि शिक्षार्थी पाठ्यक्रम सामग्री से शब्द दर शब्द सीधे नकल किए बिना अपने शब्दों में लिखने का कौशल विकसित कर सके।

प्रत्येक इकाई के अंतिम भाग में, 'सारांश' शीर्षक के अंतर्गत हम पुनरीक्षण और तत्काल संदर्भ के उद्देश्य से संपूर्ण इकाई को संक्षेप में प्रस्तुत करते हैं।

सारांश के बाद इकाई के अगले भाग में या तो 'संदर्भ या सुझावित पाठ्य अध्ययन' शामिल हैं। यदि लेखक ने सीधे किसी पाठ या पाठ से उद्धृत किया है, तो हमने संदर्भ प्रदान किए हैं। यदि कोई पाठ उद्धृत नहीं किया गया है, तो हमने उन पाठ्य पुस्तकों की एक सूची प्रदान की है जिन्हें विषय की समझ बढ़ाने के लिए शिक्षार्थी पढ़ना चाहेगा।

अंत में आइए देखें कि शिक्षार्थी इकाइयों में दिए गए व्यापक रिक्त स्थान का उपयोग कैसे कर सकता है। शिक्षार्थी प्रत्येक भाग को हाशिये में पढ़ने के बाद महत्वपूर्ण बिंदुओं को लिख सकता है। इससे आपको अपने अध्ययन में और अपनी प्रगति की जांच करने में मदद मिलेगी।

हम आपकी सफलता की कामना करते हैं। आशा है कि पाठ्यक्रम सामग्री आपके लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करेगी।

शुभकामनाएं !

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

खंड 1
मानवविज्ञान का उदय

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 1 विकासवाद*

इकाई की रूपरेखा

1.0 परिचय

1.1 विकासवादी विचारों की शुरुआत

1.2 प्रारंभिक विचारक

1.2.1 हर्बर्ट स्पेंसर

1.2.2 एडवर्ड बर्नेट टायलर

1.2.3 एल. एच. मॉर्गन

1.2.4 जे. जे. बैकोफेन

1.3 बुनियादी आधार

1.4 विकासवादी सिद्धांत की आलोचना

1.5 नव–विकासवाद

1.6 सारांश

1.7 संदर्भ

1.8 आपकी प्रगति की जांच करने के लिए उत्तर

अधिगम के उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद, शिक्षार्थी निम्न बातों को सीखेंगे;

- सामाजिक और सांस्कृतिक मानवविज्ञान में विकासवाद के संदर्भ की व्याख्या करना;
- विकासवादी विचारों के समर्थकों के योगदान को रेखांकित करना; और
- पारंपरिक विकासवादी सिद्धांत की सीमाओं पर चर्चा करना ।

1.0 परिचय

'विकासवाद' शब्द लैटिन शब्द *evolu`tio* e–से, जिसका अर्थ है 'से बाहर' और *volu`tus*, जिसका अर्थ है 'मुड़ा हुआ' से लिया गया है। इसका शाब्दिक अर्थ है 'अनियंत्रित'। पहले के समय में रोमन किताबें चर्मपत्र की लंबाई पर लिखी जाती थीं और लकड़ी की छड़ों पर मुड़ी हुई थी, ताकि पढ़ने के लिए उन्हें 'प्रस्तुत (विकसित)' करना पड़े (मैककेबे 1921:2)। सत्रहवीं शताब्दी के आसपास घटनाओं के एक क्रमबद्ध अनुक्रम को संदर्भित करने के लिए अंग्रेजी में विकास शब्द का उपयोग किया गया था विशेष रूप से एक जिसमें परिणाम कुछ हद तक शुरू से ही निहित था (कार्नेइरो 2003:1)। इस इकाई में हम चर्चा करेंगे कि मानवविज्ञान में प्रारंभिक विचारकों ने विकास और समाज और संस्कृति में परिवर्तन के प्रश्न को विकास के अपने दृष्टिकोण

*योगदानकर्ता: डॉ रूखशाना जमान, सहायक प्रोफेसर, मानवविज्ञान संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली एवं प्रोफेसर शिवा प्रसाद, मानवविज्ञान विभाग (सेवानिवृत्त), हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद।

के माध्यम से कैसे देखा। विकासवादी परिप्रेक्ष्य उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में उभरा और बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में इसने मानवविज्ञान में लोकप्रियता हासिल की।

1.1 विकासवादी विचारों की शुरुआत

सोलहवीं शताब्दी तक विद्वानों को यह अहसास हो गया था कि, मनुष्य प्राकृतिक योजना का हिस्सा है न कि दैवीय रचना का। यह वह समय था जब वैज्ञानिक दुनिया चर्च से दूर एक तर्कसंगत दृष्टिकोण की ओर बढ़ रही थी। यह प्रतिमान बदलाव एक महत्वपूर्ण घटना थी, जिसमे घटनाओं को समझने के लिए धार्मिक परिप्रेक्ष्य से वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में बदलाव हो रहा था। आइए अब मानवविज्ञान को एक विषय के रूप में स्थापित करने से पहले के कुछ प्रारंभिक कार्यों को देखें।

एडम फर्ग्यूसन, जॉन मिलर और एडम स्मिथ 1700 के आरंभ में स्कॉटिश विचारक थे, जिन्होंने समाज के क्रमिक विकास पर प्रकाश डाला था। उन्होंने तर्क दिया कि सभी समाज चार चरणों से गुजरते हैं :

(i) शिकार और खाद्य संग्रह, (ii) पशुचारण और खानाबदोश, (iii) कृषि, और अंत में (iv) वाणिज्य। इन विचारकों के लिए सैद्धांतिक आधार 1707 में इंग्लैंड के साथ एकजुट होने का उनका अपना राष्ट्रीय अनुभव था और इसका प्रभाव यूनाइटेड किंगडम के व्यापार के विकास पर हुआ। प्रारंभिक विचारकों में मोंटेस्क्यू (1689–1755) ने एक विकासवादी योजना प्रस्तावित की थी, जिसमें तीन चरण शामिल थे : शिकार या जंगलीपन, पशुपालन या बर्बरता, और सभ्यता। अपने काम, दे एल 'एस्प्रिट डेस लुइस' (कानून की आत्मा) में, उन्होंने विधायी प्रणालियों का एक संकर–सांस्कृतिक तुलनात्मक अध्ययन किया। उन्होंने कानूनी व्यवस्था को राजनीति, अर्थव्यवस्था, रिश्तेदारी, परिवार और धर्म जैसे समाज के अन्य पहलुओं के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ देखा। मोंटेस्क्यू का काम पहले अपने एकत्रित किये गए आंकड़ों पर आधारित था, जिसे उन्होंने एक छोटे नमूने के आकार पर इकट्ठा किया और द्वितीयक स्रोतों के साथ पूरा किया। उन्होंने समाज के विभिन्न चरणों का वर्गीकरण जंगलीपन, बर्बरता और सभ्यता के रूप में किया। इस व्यवस्था को उन्नीसवीं सदी के सामाजिक सिद्धांतकारों जैसे टायलर और मॉर्गन ने अपने कार्यों में स्वीकार किया और इस्तेमाल किया (सीमोर–स्मिथ 1986:105)। मॉर्गन ने अपने काम में जंगलीपन और बर्बरता दोनों को तीन चरणों में – निचला, मध्य और ऊपरी में विभाजित किया। अगले भाग में हम कुछ ऐसे विद्वानों के कार्यों को समझेंगे, जिन्होंने विकासवाद की अवधारणा पर आधारित मानवशास्त्रीय विचारों के उदय में योगदान दिया।

अपनी प्रगति जांचें 1

1) विकासवाद शब्द से आप क्या समझते हैं ?

.....

.....

.....

.....

.....

2) 1700 की शुरुआत में स्कॉटिश विचारकों के नाम बताइए, जिन्होंने यह तर्क दिया था कि, सभी समाज चार चरणों से गुजरते हैं और उनके नाम बतायें और उनका वर्णन करें।

.....

.....

.....

.....

.....

3) प्रारंभिक स्कॉटिश विचारकों द्वारा प्रस्तावित चार चरणों का वर्णन करें जिनसे समाज गुजरता है।

.....

.....

.....

.....

.....

1.2 प्रारंभिक विचारक

एक विषय के रूप में मानवविज्ञान के उदय की जड़ें पश्चात्य जगत में हैं। यूरोपीय राष्ट्रों के औद्योगीकरण और उनके उद्योगों और बाजारों की जरूरतों को पूरा करने के लिए गैर–पश्चिमी में नए स्थानों, क्षेत्रों की खोज की, जो उनके जीवन के तरीके में पश्चिमी दुनिया से भिन्न थे। यात्रियों, मिशनरियों, प्रशासकों, आदि द्वारा वापस लाई गई कहानियों के आधार पर, विद्वान जीव विज्ञान में प्रयुक्त अध्ययन की तुलनात्मक पद्धति के आधार पर काल्पनिक सोच में व्यस्त थे। तुलना इस आधार पर की गई थी कि ये समाज और उनकी संस्कृतियां अपनी मौजूदा पश्चिमी संस्कृतियों (सभ्यता) के बराबर नहीं थीं, लेकिन परिपक्व होने या 'सभ्य' में विकसित होने के विभिन्न स्तरों पर थीं, और जिन्हें यूरोपीय सभ्यता से सबसे दूर माना जाता था, और विकास के पैमाने में नीचे रखा गया है और उन्हें 'आदिम' के रूप में चिन्हित किया गया है। किसी संस्कृति को अपनी संस्कृति के आधार पर आंकने के इस तुलनात्मक दृष्टिकोण की बाद के मानवविज्ञानियों ने आलोचना की और इसे 'संजाति केंद्रिकता' का नाम दिया। इस समय के दौरान विद्वानों द्वारा बड़े पैमाने पर काम प्रकाशित किए गए थे, जिन्हें बाद में 'आर्म चेयर एथ्रोपोलाजिस्ट' के रूप में जाना जाने लगा, क्योंकि वे स्वयं जाकर आंकड़े एकत्र किए बिना गैर–पश्चिमी समाजों के सामाजिक और सांस्कृतिक विकास के अपने सिद्धांतों का निर्माण कर रहे थे। सर जेम्स फ्रेजर की रचना ''द गोल्डन बाओ'' का उल्लेख यहाँ जरूरी है, क्योंकि आज की तारीख तक यह एक पौराणिक कार्य है, जो कि बारह संस्करणों तक चला।

1.2.1 हरबर्ट स्पेंसर

अकादमिक जगत में लंबे समय से विकास शब्द को चार्ल्स डार्विन के काम से जोड़ा गया है। हालाँकि, इस धारणा को आत्मनिरीक्षण की आवश्यकता है। उनके कार्य,

'ओरिजिन ऑफ स्पीशीज, में विकास शब्द छठे संस्करण, 1872 में प्रकट होता है। इस समय तक हर्बर्ट स्पेंसर के कार्य के कारण सामाजिक विज्ञान में 'विकास' शब्द पहले से ही प्रचलित था। वर्ष 1851 में, स्पेंसर ने 'प्रगति' की व्याख्या करने के लिए अपने कार्य 'सोशल स्टेटिक्स' में इस शब्द का इस्तेमाल किया था (पृष्ठ 63) (कार्नेइरो 2003: 3)। विकास शब्द को स्पेंसर ने अपने प्रारंभिक संस्करण ''सिंथेटिक फिलॉसफी'' में 'प्रथम सिद्धांत (First Principal)' में स्पष्ट रूप से परिभाषित किया था, जिसमें कहा गया था कि 'विकास एक अनिश्चित, असंगत समरूपता से एक निश्चित, सुसंगत विविधता में; निरंतर विभेदों और एकीकरणों के माध्यम से परिवर्तन है' (स्पेंसर 1863:216 कार्नेइरो 2003:5 में उद्धृत)। उनके प्रमुख कार्य सरल से जटिल और अविभाजित से विभेदित में परिवर्तन की प्रक्रिया की समझ का गठन करता है अर्थात, एक भाग दूसरे से कैसे भिन्न है। मानव समाजों में विकास कैसे हुआ, इसका विस्तृत विवरण *द प्रिंसिपल्स ऑफ सोशियोलॉजी* में देखा जा सकता है (3 खंड, 1876–1896)। शिक्षार्थियों को यह उल्लेखनीय लग सकता है कि "सर्वाइवल ऑफ द फिटेस्ट" शब्द को स्पेंसर द्वारा समाज में विभिन्न सदस्यों के बीच संघर्ष की अवधारणा को समझाने के लिए गढ़ा गया था जिसमें योग्यता वाले लोग बढ़ते हैं, जिससे कमजोर लोगों का उन्मूलन होता है, इस प्रकार, उन्होंने सामाजिक चयन की प्रक्रिया पर प्रकाश डाला।

1.2.2 एडवर्ड बर्नेट टायलर

एडवर्ड बी टायलर को न केवल ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में मानवविज्ञान की पहली कुर्सी संभालने के लिए जाना जाता है जिन्होंने मानवविज्ञान को एक विषय के रूप में स्थापित किया है, बल्कि उनके कार्य 'प्रिमिटिव कल्चर' में 'संस्कृति' की उत्कृष्ट परिभाषा प्रदान करने के लिए भी प्रसिद्ध हैं। जिसका अभी भी उपयोग किया जा रहा है। संस्कृति को परिभाषित करने में, टायलर ने इस बात पर जोर दिया कि मानव जाति के पास एक ही संस्कृति थी और विभिन्न समाजों में विकास के विभिन्न चरणों में संस्कृति थी। उन्होंने समझाया कि क्यों, भले ही सभी मनुष्य एक ही प्रजाति के रूप में समान थे, फिर भी उन्होंने अपनी संस्कृति में इस तरह की विविधताएं प्रदर्शित कीं। टायलर ने हमें मानव समाजों की एक संस्था के रूप में धर्म के विकास का क्रम प्रदान किया, क्योंकि वह समाज को समग्र रूप में नहीं बल्कि एक दूसरे के समानांतर विद्यमान विभिन्न संस्थाओं के सह–अस्तित्व के रूप में समझते थे। उन्होंने धर्म के प्रारंभिक रूप को जीववाद (एनिमिस्म) या आत्मा में विश्वास या आत्मा और भौतिक शरीर के दोहरे शरीर में विश्वास, के रूप में परिभाषित किया। मृत्यु और स्वप्न की घटना पर अटकलों ने आत्मा में विश्वास के उद्भव का आधार प्रदान किया। उन्होंने अनुमान लगाया कि आदिम पुरुषों ने सोचा होगा कि सपने में आत्मा अस्थायी रूप से शरीर छोड़ने और घूमने में सक्षम थी, जबकि मृत्यु में यह शरीर को स्थायी रूप से छोड़ देती है। इस प्रकार जीवन या जीवतत्व का वास्तविक स्रोत आत्मा है और शरीर अपने अस्तित्व पर फलता फूलता है। टायलर के अनुसार, धर्म का विकास जीववाद से शुरू हुआ और चरण दर चरण विश्वासों की अन्य प्रणालियों में विकसित हुआ–जैसे पूर्वजों में, बलिदान और दूसरे अनुष्ठानों की प्रथा में; जीववाद के बाद प्रकृतिवाद, कुलदेवता, बहुदेववाद, धर्म के अंतिम चरण तक, अर्थात् एकेश्वरवाद और एक सर्वोच्च ईश्वर में विश्वास के बारे में आता है। इस प्रकार ईसाई धर्म, उस समय के यूरोपीय लोगों के धर्म को धार्मिक विश्वास के उच्चतम रूप के रूप में देखा गया था, जबकि

अन्य समाजों को विकासवादी चरणों में विभिन्न स्तरों पर होने का अनुमान लगाया गया था।

टायलर ने 'मानव जाति की मानसिक एकता' की अवधारणा का उपयोग यह समझाने के लिए किया कि सभी मनुष्यों में समान रूप से सोचने की क्षमता है और ''मानव प्रकृति में सामान्य समानता" है। इस प्रकार, टायलर ने संस्कृति समानता का उदाहरण देते हुए कहा कि प्राचीनतम मनुष्यों ने भी समान सांस्कृतिक लक्षणों को उत्पन्न करने के लिए समकालिक तरीकों से सोचा होगा। उपकरण बनाने की तकनीक और प्रागैतिहासिक काल के मिट्टी के बर्तनों का उदाहरण लेते हुए टायलर ने प्रदर्शित किया कि पत्थर के औजार दुनिया के विभिन्न हिस्सों में समान थे, जिनका यूरोप और भारत की तरह कोई सीधा संपर्क नहीं था। ये उपकरण और मिट्टी के बर्तनों के प्रकार भी विकास के विभिन्न चरणों से गुजरे और समय बीतने के साथ और अधिक प्रगतिशील प्रकार के देखे गए। संस्कृति के विकास की खोज करते हुए टायलर ने 'उत्तरजीविता' के सिद्धांत को उन लक्षणों के अवशेष के रूप में सामने रखा जो अब अपना कार्य खो चुके हैं लेकिन आदत के बल या परिवर्तन के लिए रीति–रिवाजों की जड़ता से बने हुए हैं। टायलर द्वारा प्रदान किए गए कई उदाहरणों में से एक जैकेट की कमर के पीछे अप्रयुक्त बटन का था, जो अब अपने कार्यात्मक मूल्य खो चूका है या मिटटी के बर्तन जिसे हम अब उपयोग नहीं करते हैं लेकिन सजावट के टुकड़ों के रूप में और अतीत की एक कड़ी के रूप में रखते हैं। धर्म के संदर्भ में जीवित रहने को प्राचीन रीति–रिवाजों और विश्वासों की दृढ़ता के उदाहरणों के साथ दिखाया गया था, जिसका अर्थ लंबे समय से भुला दिया गया है, फिर भी अभी भी धार्मिक प्रदर्शनों का हिस्सा बना हुआ है। इस प्रकार, उत्तरजीविता वे लक्षण हैं जो या तो अपने मूल रूप में या संशोधित रूपों में अतीत से, आदत के बल के रूप में या परंपराओं के प्रति सम्मान दिखाने के तरीके के रूप में या एक तरह के पहचान चिह्न के रूप में लिए जाते हैं। उनके पास अब कोई वास्तविक कार्य नहीं है बल्कि केवल प्रतीकात्मक और सजावटी मूल्य हैं। लेकिन उत्तरजीविता एक संस्कृति के अतीत में मौजूद चीजों का पता लगाने के लिए वास्तविक सुराग प्रदान करती है और इसे विकासवादी अनुक्रमों के पुनर्निर्माण की एक विधि के रूप में देखा जाता है।

1.2.3 एल. एच. मॉर्गन

लुईस हेनरी मॉर्गन एक अमेरिकी मानवविज्ञानी थे, जो पेशे से एक प्रशिक्षित वकील थे। ईरोकुइस के जीवन के मूल तरीके में उनकी रुचि भूमि अधिकारों के नुकसान के आधार पर कानून के मुकदमे से शुरू हुई थी, जिसे वे ईरोकुइस के लिए संभाल रहे थे। मॉर्गन ने ईरोकुइस के बीच एक लंबा समय बिताया क्योंकि यह कहा जाता है कि ईरोकुइस व्यावहारिक रूप से उनके पड़ोस में रह रहे थे, और इस प्रकार, खुद से आंकड़ें के संग्रह में उनके साथ शामिल थे, जिससे उनका कार्य टायलर की तरह अपने समय के अन्य आर्म चेयर (Arm Chair) मानवविज्ञानी से अलग हो गया था।

मानवविज्ञान की दुनिया में एलएच मॉर्गन का प्रमुख योगदान रिश्तेदारी शब्दावली और नातेदारी प्रणालियों का अध्ययन था। ईरोकुइस के बीच, मॉर्गन ने परिजनों के संबंधों और रिश्तेदारों के एक–दूसरे को संबोधित करने के तरीके का अध्ययन किया। मॉर्गन के प्रमुख अवलोकनों में से एक यह था कि ईरोकुइस के बीच एक बच्चा मां और मां की बहन को और पिता और पिता के भाई को एक ही शब्द से संबोधित करता है। जबकि पिता की बहन के बच्चे और मां के भाई के बच्चों को चचेरे भाई कहा जाता

था। मॉर्गन ने ईरोकुइस की पहचान की रिश्तेदारी को वर्गीकृत रिश्तेदारी प्रणाली के रूप में माना जाता है क्योंकि यह एक ही रिश्तेदारी के साथ दो अलग–अलग व्यक्तियों को एक साथ जोड़ता है। उन्होंने नातेदारों के नामकरण की अंग्रेजी प्रणाली को वर्णनात्मक नातेदारी प्रणाली कहा क्योंकि इसमें प्राथमिक नातेदारों के लिए प्रयुक्त होने वाले नातेदारी शब्दों का प्रयोग किसी और के लिए नहीं किया जाता है। ओजिबवे जनजाति का अध्ययन करते हुए उन्होंने महसूस किया कि उनकी रिश्तेदारी की शर्तें ईरोकुइस के समान थीं, इस प्रकार वर्गीकरण प्रणाली की पुष्टि हुई। अपनी टिप्पणियों के आधार पर, मॉर्गन ने माना कि सभी मूल अमेरिकियों के पास एक वर्गीकरण प्रणाली है जो बाद में विकास के विभिन्न चरणों से गुजरने के बाद अंग्रेजी प्रणाली की तरह वर्णनात्मक प्रणाली में विकसित हुईरू जंगलीपन, बर्बरता और सभ्यता। पहले दो चरणों को वर्गीकृत रिश्तेदारी द्वारा चिह्नित किया जाता है वे वर्णनात्मक रिश्तेदारी प्रणाली में विकसित होते हैं, क्योंकि समाज सभ्य हो जाते हैं। मॉर्गन ने विभिन्न प्रकार की निर्वाह गतिविधियों को नातेदारी प्रणालियों के प्रकारों से जोड़ा। जब संसाधनों को सामूहिक रूप से आदिवासी स्तर पर रखा जाता है तो वर्गीकरण प्रणाली प्रचलित होती है क्योंकि कबीला, संपत्ति का सामूहिक मालिक होता है और एक कबीले का सदस्य दूसरों द्वारा प्रतिस्थापित किया जा सकता है। उदाहरण के लिए जब संपत्ति पितृवंश के पास होती है, तो पिता और पिता के भाई संपत्ति के समान मालिक होते हैं और इसलिए एक को दूसरे के लिए प्रतिस्थापित किया जा सकता है। निजी संपत्ति के अधिकारों के उदय के साथ और जब यह विरासत की पंक्तियों से गुजर रहा है तो ''वर्णनात्मक परिजन प्रणाली विकसित होती है, और एकल परिवार अंततः विकसित होता है'' (मूर 2009:24)। इसका अर्थ यह था कि जो समूह वर्गीकृत रिश्तेदारी प्रणाली का पालन करते थे, वे जंगलीपन और बर्बर की अवस्था में जी रहे थे । मॉर्गन की खोज उनके दो कार्यों में प्रकाशित हुई थी, ''सिस्टम्स ऑफ कॉन्सैंग्युनिटी एंड एफिनिटी ऑफ द ह्यूमन फैमिली'' (1870) और उनकी अति उत्तम रचना, ''एन्सिएंट सोसाइटी'' (1877)।

मॉर्गन ने अपने काम में कहा था किः ''आविष्कारों और खोजों के उत्पादन के साथ, और संस्थानों के विकास के साथ, मानव मस्तिष्क आवश्यक रूप से विकसित और विस्तारित हुआ, और हम मस्तिष्क के एक क्रमिक विस्तार को पहचानने के लिए प्रेरित होते हैं, विशेष रूप से मस्तिष्क के एक विशेष हिस्से सेलेब्रल के विकास के लिए "(मॉर्गन 1887)। मॉर्गन ने इस अवधारणा को समाजों के बीच निर्वाह पद्धति के उदाहरण के साथ प्रस्तुत किया और यह भी बताया कि समाज की प्रगति के साथ इसमें कैसे सुधार हुआ। मॉर्गन की विकासवादी योजना मानवविज्ञानियों के बीच बहस का प्रश्न बनी रही, फिर भी उन्होंने अन्य विचारकों को प्रभावित किया, क्योंकि उनके काम ने भौतिकवादी कारकों को सामने लाया, जो इस पहलू को उजागर करते हैं कि आर्थिक और तकनीकी जानकारी मानवता के भाग्य को आकार देने में एक लंबा रास्ता तय करती है। फ्रेड्रिक एंगेल्स का काम मॉर्गन 'एन्सिएंट सोसाइटी' के विचारों से प्रभावित था। मॉर्गन की राय एंगेल्स की पुस्तक ''ओरिजिन ऑफ फॅमिली, प्राइवेट प्रॉपर्टी एंड द एस्टेट'' (1884) में परिलक्षित होती है।

1.2.4 जे. जे. बैकोफेन

ग्रीक और रोमन साहित्य से प्रेरित होकर जोहान जैकब बैकोफेन ने 'मातृ–अधिकार' या प्रागैतिहासिक मातृसत्ता की अवधारणा को सैद्धांतिक रूप दिया था। 1861 में प्रकाशित 'दास मटररेच्ट' (या मातृ–अधिकार) में, बैकोफेन ने प्राचीन दुनिया में मातृसत्ता के

धार्मिक और न्यायिक चरित्र पर ध्यान दिया था। उन्होंने कब्र चित्रों और उनके प्रतीकवाद का अध्ययन किया और लिंग संबंधों की व्याख्या उन पर पितृसत्तात्मक के रूप में की जहां महिला को एक वस्तु के रूप में दर्शाया गया है। उन्होंने सभ्यता को पश्चिम और पितृसत्ता के साथ, और मातृसत्ता को विकास की निचली अवस्था के साथ जोड़ा, जहां समाज पितृत्व जैसी अमूर्त अवधारणाओं में सोचने के लिए पर्याप्त उन्नत नहीं है और केवल जैविक मातृत्व के बारे में जानते हैं। उन्होंने मातृ–अधिकार समाज और पितृ अधिकार समाज का गठन करने वाले लक्षणों की पहचान की। इस प्रकार, उनके लिए माता का अधिकार या पिता का अधिकार अकेली अवधारणाएँ नहीं थीं, बल्कि समग्र अवधारणाएँ थीं, जिन्होंने विभिन्न भौतिक और प्रतीकात्मक आयामों को एकीकृत किया। उन्होंने एक सही समाज की कल्पना की और इसे एक किताब की तरह वर्णित किया। बच्चे के एकमात्र माता–पिता होने के नाते, जिसके माध्यम से वंश का पता लगाया जा सकता था, महिलाओं ने समाज में उच्च सम्मान और सम्मान की स्थिति ग्रहण की। इस धारणा के साथ, बैकोफेन ने 'आदिम' दुनिया में महिलाओं के शासन की नींव रखी, जिसे उन्होंने स्त्री लोकतंत्र कहा। हालाँकि इसने महिलाओं को एक उच्च दर्जा दिया फिर भी बैकोफेन ने इस चरण को अराजकता के प्रारंभिक चरण के रूप में तब तक निंदनीय बताया जब तक कि पुरुषों द्वारा शासन नहीं किया गया जिससे समाज की प्रगति हुई है। मातृसत्ता से पितृसत्ता की प्रगति में महिलाओं की भूमिका में गिरावट देखी गई और पुरुषों के हाथों में शक्ति में वृद्धि हुई, जिससे वे अधिक मुखर हो गईं। संकीर्णता से एक ही बार विवाह करने की प्रथा में क्रमिक संक्रमण को भी इंगित किया गया था। आदिम मातृसत्तात्मक धर्म या उर–धर्म के संदर्भ में मातृ–अधिकार अस्तित्व में था।

सर हेनरी मेन ने अपने काम को रोम की प्राचीन कानूनी व्यवस्था, इस्लामी कानून और ब्राह्मणवादी कानूनों पर आधारित किया था और पिता के समक्ष मां को रखने का विरोध किया था। मेन ने, अपने कार्य ''एंशिएंट लॉ,'' (1861) की तर्क दिया था और पिता के अधिकार की वकालत की थी, उन्होंने लोगों के कानूनों की स्थापना की जो एक विशेष समाज के लिए सामाजिक विरासत को एकीकृत करते थे, जबकि उस अवधारणा की सार्वभौमिकता को नकारना उस दौरान अध्ययन का प्राथमिक केंद्र था। दूसरी ओर मैकलेनन ने अपने कार्य को अपनी रचना ''प्रिमिटिव मैरिज'', (1865) में माँ के अधिकार पर आधारित किया, जहाँ उन्होंने यह मान लिया था कि चूँकि आदिम लोग केवल जैविक मातृत्व के बारे में जानते थे, इसलिए यह सोचना तर्कसंगत था कि पहले मातृत्व को मान्यता दी जाएगी। उन्होंने समूहों के बीच युद्ध के नियमन के लिए विवाह की उत्पत्ति या कामुकता के नियमन का पता लगाया।

अपनी प्रगति जांचें 2

4) 'सर्वाइवल ऑफ द फिटेस्ट' शब्द किसने गढ़ा? इसका क्या महत्व है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

5) सांस्कृतिक उत्तरजीविता क्या हैं? वे क्रमिक विकास की व्याख्या कैसे करते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

6) 'मानव जाति की मानसिक एकता' क्या है? टायलर ने धर्म की उत्पत्ति की व्याख्या करने के लिए इस अवधारणा का प्रयोग कैसे किया?

.....

.....

.....

.....

.....

7) कौन से मानवैज्ञानिक ने विस्तृत रूप से वर्गीकरण और वर्णनात्मक नातेदारी का अध्ययन किया और मानवैज्ञानिक अध्ययन में नातेदारी अध्ययन को स्थापित किया? इन शब्दों और उपयोग को परिभाषित करें।

.....

.....

.....

.....

.....

8) स्त्री–तंत्र को परिभाषित कीजिए। विकासवादी योजना में समाजों को श्रेणीकृत करने के लिए इसका उपयोग कैसे किया गया?

.....

.....

.....

.....

.....

1.3 विकासवादी स्कूल के बुनियादी आधार

पिछले भाग में हमने मानवविज्ञानियों के कुछ कार्यों पर चर्चा की थी, जिन्होंने समाज और संस्कृति के उद्‌भव को समझने के लिए विकासवादी योजना का उपयोग किया था। हमने देखा था कि विकास के संदर्भ में अधिकांश लोग मानव जाति की 'मानसिक एकता' की अवधारणा को आगे बढ़ाते हुए सरल से जटिल तक प्रगति की एकल पंक्ति में विश्वास करते थे। यानी दुनिया में हर जगह इंसान एक ही तरह से सोचते हैं। आइए, अब हम विकासवादी विचारधारा के मूल आधारों पर चर्चा करें।

1) **एकरेखीय विकासवाद:** विकासवादियों का विश्वास था कि समाज का विकास सरल से जटिल की ओर विकास की एक सटीक रेखा में या क्रम की एक ही पंक्ति में होता है, जो निम्न से उच्च अवस्था में या प्रगति की एक पंक्ति में होता है। इस प्रकार, पारंपरिक विकासवादी सिद्धांत एक ऐसा सिद्धांत है जो मानता है कि सांस्कृतिक प्रगति के लिए केवल एक ही रेखा है।

2) **सार्वभौमिक विकासवाद:** दुनिया भर में हो रहे विकास पद्धति पर जोर दिया गया था और यह 'मानव जाति की मानसिक एकता' की अवधारणा पर आधारित था। मनुष्य की मस्तिष्क क्षमता के प्रश्नों को जन्म देना वैसा ही है, जैसे समाज सरल से जटिल की ओर विकसित होता है। तर्क यह था कि सभी समाज उसी प्रक्रिया से गुजरेंगे जैसे मानव मस्तिष्क सरल से जटिल तक विकसित होता है।

3) **एकल संस्कृति:** जैसा कि इंगोल्ड (1986) ने अपने काम में वर्णित किया है, विकासवादी सिद्धांत के प्रचारकों का मानना था कि केवल एक संस्कृति है, जिसकी पूंजी सी(C) है। दुनिया भर के समाजों में हम जो अंतर देखते हैं, वह इसलिए नहीं है क्योंकि उनके पास विभिन्न संस्कृतियां हैं, बल्कि इसलिए हैं क्योंकि वे एक ही संस्कृति के विभिन्न चरणों में हैं। 'संस्कृति समानता' के उदाहरणों का हवाला देते हुए एक 'संस्कृति' के सरल से जटिल की ओर बढ़ने की इस घटना को विकासवादियों द्वारा समझाया गया था।

4) **क्रमिक प्रगति:** विकासवादी सिद्धांतकारों ने कहा कि एक बार प्रगति का क्रम स्थापित हो जाने के बाद, यह एक चरण से दूसरे चरण में कदम रखेगा और इसी क्रम में जारी रहेगा जिसमें समाज प्रगति करेगा। प्रत्येक समाज समान चरणों से गुजरता है लेकिन अपनी गति से।

5) **तुलनात्मक विधि**: विकासवादी मूल रूप से तुलनात्मक पद्धति का उपयोग करके समाज और संस्कृति के विकास की अवधारणा पर आधारित है। गोरे यूरोपियों को 'आराम कुर्सी मानवविज्ञानियों' के रूप में भी जाना जाता है, जिन्होंने तुलना तालिका निर्धारित करने के लिए अपने स्वयं के समाजों का उपयोग किया, जहां उन्होंने अपने समाज को 'सभ्यता' के शीर्ष पर रखा और अन्य सभी समाजों की इस पैमाने के आधार पर तुलना की।

अपनी प्रगति जांचें 3

9) सार्वभौमिक विकासवाद को परिभाषित कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

10) तुलनात्मक विधि की व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

1.4 विकासवाद की आलोचना

क) **औपनिवेशीकरण का विस्तार:** विकासवादी सिद्धांत ने एक तरह से नैतिक आधार पर उपनिवेशीकरण को उचित ठहराया। यूरोपियों के गोरे लोग, जिन्हें अपनी ही नस्ल के बुद्धिजीवियों द्वारा सभ्यता के उच्चतम स्तर पर रखा गया था, उन्हें 'सभ्य बनाने' के नाम पर उपनिवेशों की लूट को सही ठहराया।

ख) **सांस्कृतिक नृवंशविज्ञानवाद:** गोरे यूरोपियों ने अपनी संस्कृति को सभ्यता के लिए एक मानदंड के रूप में प्रस्तुत करते हुए अन्य सभी समाजों को विकासवादी पैमाने पर रखा। उन्होंने प्रत्येक समाज को अपने तकनीकी ज्ञान के आधार पर विकास के विभिन्न स्तरों पर होने के रूप में उचित ठहराया। इस प्रकार यह, 'सांस्कृतिक नृवंशविज्ञानवाद' को जन्म दे रहा है। इस अवधारणा ने तुलनात्मक पद्धति का अवमूल्यन किया, क्योंकि इसका उपयोग मुख्य रूप से विद्वानों ने अपने समाज को अध्ययनाधीन लोगों के समाज से 'श्रेष्ठ' साबित करने के लिए किया।

ग) **सांस्कृतिक सापेक्षवाद से रहित**: सांस्कृतिक तत्व और सामाजिक संस्थाएँ प्रत्येक समाज में अपने–अपने संदर्भ में प्रासंगिक हैं। विकासवादियों ने कुछ संस्कृतियों को सरल और अन्य को अधिक जटिल के रूप में वर्गीकृत करते हुए, प्रत्येक संस्कृति से जुड़े मूल्य को दूर कर दिया। विकासवादियों ने धर्म, अर्थव्यवस्था और राजनीतिक व्यवस्था जैसी सामाजिक संस्थाओं को विभिन्न संस्कृतियों में व्यक्तिगत रूप से उनकी तुलना करने के लिए, अलग–अलग किस्में बनाने के रूप में माना था। इस आधार के कारण, उस समाज के संदर्भ में रीति–रिवाजों और प्रथाओं का अपना सांस्कृतिक अर्थ खो गया था।

घ) **अनुभवजन्य आंकड़ों का अभाव:** बाद के मानवविज्ञानियों ने इस तथ्य की ओर इशारा किया था कि अधिकांश आंकड़ों को जोड़ दिया गया था क्योंकि कोई प्रत्यक्ष आंकड़ा संग्रह नहीं था। एकत्र किया गया आंकड़ा यात्रियों, नाविकों, मिशनरियों और प्रशासनिक व्यक्तियों की कहानियों और विवरणों पर आधारित था। इस प्रकार, इस तरह के काम पुराने आंकड़ों पर आधारित थे और विद्वानों को आराम–कुर्सी मानवविज्ञानियों के रूप में जाना जाने लगा । हालांकि, यह भी ध्यान दिया जाना चाहिए कि उनमें से कुछ ने मॉर्गन की तरह अपने समय के दौरान प्रत्यक्ष रूप से आंकड़े एकत्र करने का प्रयास किया था। फिर भी एक सटीक पद्धति का अभाव था और इस प्रकार यह, वैज्ञानिक शक्ति से वंचित हो गया।

च) **अप्राप्त कड़ी**: फ्रांज बोआस, मार्गरेट मीड और अमेरिकी संस्कृति स्कूल के अन्य विद्वानों ने 'मानव जाति की मानसिक एकता' की अवधारणा के आधार पर सार्वभौमिक विकास पर सवाल उठाया क्योंकि यह सांस्कृतिक विविधताओं की व्याख्या नहीं कर सका। इसके अलावा, बाद के अध्ययनों से पता चला है कि मॉर्गन की तकनीकी प्रगति के आधार पर विकास की अवधारणा पॉलिनेशियन प्रमुखों की व्याख्या नहीं कर सकती है जो जटिल राजनीतिक व्यवस्था पर आधारित थे, फिर भी तकनीकी रूप से वे बहुत पीछे थे, क्योंकि उनकी संस्कृति में मिट्टी के बर्तनों के उपयोग के बारे में भी नहीं पता था।

11) विकासवाद के आलोचनाओं की सूची बनाइए।

.....

.....

.....

.....

.....

1.5 नव–विकासवाद

विकासवादी दृष्टिकोण के पुनरुद्धार का श्रेय सांस्कृतिक नव– विकासवादियों, लेस्ली ए व्हाइट (1900–1975), जूलियन एच स्टीवर्ड (1902–1972), एल्मन आर सर्विस (1915–1996) और मार्शल डी सहलिन्स (1930–2021) को दिया जा सकता है। 20वीं सदी के आरंभिक मानवविज्ञानियों ने अनुभववाद की पद्धति को शामिल करके और विकासवाद को मापने के तर्कसंगत मानदंड विकसित करने का प्रयास करके पारंपरिक विकासवादी सिद्धांतकारों के काम पर पुनः विचार करने का प्रयास किया।

लेस्ली व्हाइट ने संस्कृति को एक विशेष दर्जा दिया है क्योंकि यह मानव की अनूठी क्षमता पर आधारित है और इसका विचार है कि संस्कृति को प्रतीकों में दर्शाया जा सकता है। उदाहरण के लिए, कलम एक सामग्री है, मानव निर्माण का एक उत्पाद है और इसका एक नुकीला सिरा है जिसका उपयोग मानव द्वारा लिखित शब्दों के माध्यम से अर्थ को अंकित करने और संप्रेषित करने के लिए किया जाता है इसलिए कलम लेखन का प्रतीक है, और भारत का राष्ट्रीय ध्वज हमारे देश का प्रतीक है। प्रतीक बनाने की यह क्षमता मनुष्य का एक अनूठा गुण है। सांस्कृतिक विकास के तंत्र की खोज में उन्होंने कानून स्थापित करने का प्रयास किया। व्हाइट के अनुसार संस्कृति संचार द्वारा सक्षम है और यह अपने सिद्धांतों और कानूनों के आधार पर विकसित होती है। मानव संस्कृति हमेशा बदल रही है, इसकी गतिशीलता ऊर्जा की खपत से आती है। व्हाइट के विचार दो पुस्तकों ''द साइंस ऑफ कल्चर'' (1949) और ''द इवोल्यूशन ऑफ कल्चर'' (1959) में लिखे गए थे। व्हाइट का विकासवादी दृष्टिकोण मूल ऊर्जा की खपत पर केंद्रित था। प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष जितनी अधिक ऊर्जा का दोहन किया जाएगा, सांस्कृतिक विकास का पैमाना उतना ही अधिक होगा। जानवरों के साथ हल लगाकर पशु ऊर्जा के दोहन से कृषि उत्पादन में सुधार हुआ है। भोजन में अधिशेष के परिणामस्वरूप जनसंख्या में वृद्धि हुई है और दहन के लिए जीवाश्म ईंधन के उपयोग से औद्योगिक क्रांति हुई है। उनकी अवधारणा एक सूत्र E x T= C में व्यक्त की गई है। जहां E उपयोग की जाने वाली ऊर्जा की मात्रा है, T गुणवत्ता या कुशल उपकरण है जिसके परिणामस्वरूप C संस्कृति के रूप में उत्पन्न होता है। व्हाइट संस्कृति के विस्तार को खपत की गई ऊर्जा से जोड़ते हैं। हालांकि, ''ऊर्जा की खपत और संस्कृति के विकास के बीच घनिष्ठ संबंध स्थापित किया गया था, लेकिन एक संबंध स्थापित करना स्पष्टीकरण प्रदान करने के लिए पर्याप्त नहीं है। इसके अलावा, व्हाइट ने यह नहीं बताया कि जटिलता कुछ जगहों पर क्यों उभरी और दूसरों में क्यों नहीं" (क्लैसन 2002)। इसलिए, ऊर्जा की खपत से संस्कृति में विकास होता है, को साबित करना मुश्किल है (क्लैसन 2000)।

नव–विकासवादी मानवविज्ञानी जूलियन स्टीवर्ड को आधुनिक सांस्कृतिक पारिस्थितिकी का अग्रणी माना जाता है। स्टीवर्ड ने विकासवादी विचार को तीन भागों में विभाजित किया, अर्थात् एकरेखीय, सार्वभौमिक और बहुरेखीय। जूलियन स्टीवर्ड का सिद्धांत उनकी संस्कृति की अवधारणा पर आधारित था जिसमें उन्होंने अपनी पुस्तक थ्योरी ऑफ कल्चर चेंज'' में संस्कृति को एक केंद्र और एक परिधि के रूप में वर्णित किया है। संस्कृति की इस दो–स्तरीय परिभाषा ने उन्हें संस्कृति परिवर्तन के लिए एक प्रेरक शक्ति के रूप में संस्कृति और पर्यावरण की बातचीत की पहचान करने में सक्षम बनाया। उनके अनुसार संस्कृति का केंद्र सांस्कृतिक और पर्यावरणीय चर के बीच संबंध से बनता है और इसमें संस्कृति के सामाजिक–आर्थिक पहलू शामिल होते हैं। यह संबंध द्वंद्वात्मक है, जिसमें संस्कृति पर्यावरण पर कार्य करती है, पर्यावरण बदलता है और बदले हुए वातावरण के अनुकूल होने के लिए संस्कृति को बदलना पड़ता है। यहाँ स्टीवर्ड की संस्कृति की अवधारणा मार्क्सवाद की द्वंद्वात्मक प्रक्रिया के प्रभाव को दर्शाती है। संस्कृति के परिधीय पहलू वे हैं जो सीधे पर्यावरण से जुड़े नहीं हैं और प्रत्येक संस्कृति को अपना विशिष्ट चरित्र देते हैं। चूंकि अधिकांश मानव समाज पर्यावरण के लिए अनुकूलन के कुछ ही तरीके दिखाते हैं, विभिन्न संस्कृतियों के संस्कृति केंद्र को अनुकूलन के कुछ ज्ञात तरीकों से प्ररूप विज्ञान के योग्य समझा जा सकता है, अर्थात् शिकार, भोजन एकत्र करना, पशुचारण, बागवानी, कृषि और औद्योगिक समाज। निर्वाह का तरीका जितना सरल होगा, संस्कृति और पर्यावरण के बीच संबंध उतना ही अधिक प्रत्यक्ष होगा। स्टीवर्ड के अनुसार, संस्कृति और पर्यावरण के बीच द्वंद्वात्मक संबंधों द्वारा ली गई दिशा के आधार पर विकास की विभिन्न पंक्तियों का निर्माण करना सैद्धांतिक रूप से संभव है। लेकिन इसके लिए ऐतिहासिक अवधि में बड़ी मात्रा में आंकड़े एकत्र करने की आवश्यकता होती है। स्टीवर्ड संभावित विकास की केवल एक पंक्ति का निर्माण करने में सक्षम थे। चूंकि दुनिया में कई पारिस्थितिक क्षेत्र हैं, इसलिए संभव है कि विकास कई दिशाओं में हो सकता है, इसलिए, इस सिद्धांत को बहुरेखीय विकासवाद का सिद्धांत कहा जाता है। स्टीवर्ड के बाद, किसी और को विकास की और रेखाएँ बनाने के लिए प्रेरित नहीं किया गया था। इस सिद्धांत की आलोचना यह थी कि विकास के कई तरीके हो सकते हैं और यह निर्धारित करना संभव नहीं है कि कौन से चर को केंद्र में रखा जा सकता है और किस को परिधि में। हालांकि, संस्कृति के इस प्रतिमान ने अनुकूलन के विभिन्न तरीकों के प्रतिमानों को बनाने में मदद की और प्रत्येक निर्वाह प्रकार का गठन करने वाले मूल सांस्कृतिक तत्वों की पहचान की।

मार्शल सहलिन्स और एल्मन सर्विस, मिशिगन विश्वविद्यालय में सहयोगी थे और व्हाइट और स्टीवर्ड के छात्र थे और उन्होंने व्हाइट और स्टीवर्ड के कार्यों को संयोजित करने के लिए काम किया। उन्होंने दो प्रकार के विकास अर्थात, 'सामान्य' और 'विशिष्ट' की पहचान करके, उनके बीच अंतर किया। विशिष्ट विकास एक पर्यावरण में एक विशेष समाज का अनुकूलन है, और यह अक्सर उस निवास स्थान के लिए विशिष्ट रहता है, जैसे आर्कटिक का एस्किमो या कालाहारी के बुशमेन, में अनुकूलन। सामान्य विकास समाज की एक सामान्य प्रगति है जिसमें उच्च रूप निम्न रूपों से निकलते हैं और निम्न रूपों से आगे बढ़ते हैं। स्टीवर्ड विशिष्ट के बहुरेखीय विकास का प्रतिनिधित्व करते हैं और सामान्य विकास व्हाइट के सार्वभौमिक विकास जैसा दिखता है। आरेखीय रूप से, उन दोनों को एक पेड़ द्वारा दर्शाया जा सकता है, जिसमें तना ऊपर की ओर बढ़ता है, सामान्य विकास और सभी दिशाओं में बढ़ने वाली शाखाएं, विशिष्ट विकास का प्रतीक है। यदि किसी को ऐतिहासिक विकास में

विविधता की तलाश करनी है, तो संस्कृति के विशिष्ट विकास की खोज करनी होगी, एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में समाज विशेष की सामाजिक संस्थाओं में परिवर्तन की तलाश करनी होगी। यदि कोई मानव जाति के विकास की समग्र तस्वीर को शिकार–भोजन संग्रह से लेकर औद्योगिक समाज तक देखता है, तो वह सामान्य विकास के बारे में बात कर रहा है। सर्विस और सहलिन्स ने अनुकूलन और अनुकूलनशीलता की अवधारणाओं का उपयोग करके इन दो प्रकारों का वर्णन किया। पूर्व का तात्पर्य केवल एक विशिष्ट स्थान पर जीवित रहने की क्षमता से है और बाद वाले का तात्पर्य बहुत बड़े भौगोलिक क्षेत्र में फैलने की क्षमता से है। सहलिन्स अनुकूलन क्षमता के उदाहरण के रूप में कई क्षेत्रों को उपनिवेश बनाने के लिए यूरोपीय लोगों द्वारा उपयोग किए जाने वाले बारूद (गन पाउडर) का उदाहरण देते हैं। एक प्रमुख संस्कृति के इस प्रसार को अनुकूली विकिरण के रूप में वर्णित किया गया था।

सहलिन्स और सर्विस ने दो प्रकार के विकास को श्रेणीबद्ध नहीं किया और अनुकूली विकिरण के तरीके को अक्सर उन लोगों के प्यार के लिए हानिकारक माना जिनका अतिक्रमण या उपनिवेशिकरण होता है। नव–विकासवादी विशेष वातावरण के अनुकूलन की प्रक्रिया द्वारा विशेष संस्कृतियों के विकास का प्रदर्शन करके, प्रारंभिक पारंपरिक विकासवादी से अलग हो गए।

अपनी प्रगति जांचें 5

12) नव–विकासवाद क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

13) नव–विकासवादी पहले के पारंपरिक विकासवादियों से किस प्रकार भिन्न हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

1.6 सारांश

मानवविज्ञान की जड़ें यूरोप के उपनिवेशवाद और लूट के इतिहास में हैं, लेकिन उन संस्कृतियों को समझने की इच्छा में भी हैं जिन पर उन्होंने शासन किया था। अपनी संस्कृति के अतीत को जानने के कारण सांस्कृतिक विकास के इतिहास में रुचि पैदा की, जिसका परिणाम विकासवाद का सिद्धांत था जो एक 'काल्पनिक इतिहास' के रूप में सामने आया। विकासवाद, मूल रूप से, गैर–यूरोपीय लोगों को उनकी यात्रा में वर्गीकृत करने का उन श्रेणियों में गोरे यूरोपीय लोगों का तरीका था, जो उनके बीच

के अंतर को निम्न से उच्च चरणों के विकास के सिद्धांत द्वारा समझा सकते थे। इसने 'आदिम' समाजों की अवधारणा का आविष्कार किया, जो परिपक्व यूरोपीय सभ्यताओं, जो विकास के उच्चतम बिंदु का मानदंड स्थापित करता है की तुलना में अभी भी शैशवावस्था में चिन्हित है, इस प्रकार, 'संजाति केन्द्रिकता' की अवधारणा उत्पन्न हुई। गोरे यूरोपियों ने, गैर–यूरोपीय लोगों को उस पैमाने पर आंका, जहां उन्होंने स्वयं को सभ्यता के उच्चतम स्तर पर रखा और उन्हें 'सभ्य बनाने' के नाम पर उपनिवेशों की लूट को सही ठहराया। यह बौद्धिक दृष्टिकोण 'तर्कसंगतता' या 'सबूत' पर आधारित नहीं था, न ही इसने किसी अनुभवजन्य पद्धति का अनुसरण किया। इस प्रकार, द्वितीय स्रोतों पर आधारित ऐसे मानवविज्ञानियों के विचारों को ''आर्म चेयर दृष्टिकोण'' के रूप में संदर्भित किया गया था, जो भौतिक रूप से देखे गए साक्ष्य से रहित थे, लेकिन केवल निगमनात्मक तर्क पर आधारित थे।

1.7 संदर्भ

Barnard, Alan. 2004. *History and Theory in Anthropology*. Cambridge: Cambridge University Press.

Carneiro, Robert. 2003. *Evolutionism in Cultural Anthropology: A Critical History*. USA: Westview Press.

Claessen H.J.M. 2000.*Structural Change: Evolution and Evolutionism in Cultural Anthropology*. Leiden: Research School CNWS, Leiden University.

2002. "Evolution and Evolutionism". In Alan Barnard and Jonathan Spencer (eds.) *Encyclopaedia of Social and Cultural Anthropology*. London: Routledge.

Eriksen Thomas Hylland and Finn Sivert Nielsen. 2001. *A History of Anthropology*. London: Pluto Press.

Erickson. Paul. A and Liam D. Murphy. 2001. *A History of Anthropological Theory.* Broadview Press.

Harris, Marvin. 1969. *The Rise of Anthropological Theory*. London: Routledge & Kegan Paul Ltd.

McCabe Joseph. 1921 *The ABC of Evolution*. New York: Putman.

Moore, Jerry D. 2009. *Visions of Culture: An Introduction to Anthropological Theories and Theorists. Lanham*: Altamira Press.

Morgan, L.H. 1887. *Ancient Society or Researches in the Lines of Human Progress from Savagery Through Barbarism to Civilization*. New York: Henry Holt and Company

Spencer, Herbert. 1851. *Social Statics*. London: John Chapman

1876. "The Survival of the Fittest". *Nature,* Vol.5. pp. 263-264

1890 The Principles of Sociology. Vol 1. 3rd ed. New York: D. Appleton and Company

Sidky, H. 2004. *Perspectives on Culture: A Critical Introduction to Theory in Cultural Anthropology.* New Jersey: Pearson Education Inc.

Tylor, E.B. 1920. *Primitive Culture* (Vol. I). London: John Murray.

1.8 आपकी प्रगति की जांच करने के लिए उत्तर

1. भाग 1.0 का संदर्भ लें।
2. भाग 1.1 का संदर्भ लें।
3. भाग 1.1 का संदर्भ लें।
4. हर्बर्ट स्पेंसर।
5. उत्तर हेतु अनुभाग 1.2.2 का संदर्भ लें।
6. अनुभाग 1.2.2 देखें।
7. एल. एच. मॉर्गन
8. अनुभाग 1.2.4 का संदर्भ लें।
9. भाग 1.3 का संदर्भ लें।
10. भाग 1.3 का संदर्भ लें।
11. भाग 1.4 का संदर्भ लें।
12. भाग 1.5 का संदर्भ लें।
13. भाग 1.5 का संदर्भ लें।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 2 प्रसारवाद*

इकाई की रूपरेखा

2.0 परिचय

2.1 प्रसार की मूल–भूत विशेषताएं

2.2 प्रसारवाद के स्कूल

2.2.1 प्रसारवाद का ब्रिटिश स्कूल

.2.2 प्रसारवाद का जर्मन–ऑस्ट्रियन स्कूल

.2.3 प्रसारवाद का अमेरिकन स्कूल

2.3 सारांश

2.4 संदर्भ

2.5 आपकी प्रगति की जाँच करने के लिए उत्तर

अधिगम के उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप निम्नलिखित बिन्दुओं को समझने में सक्षम होंगे:

- स्पष्ट करना कि सांस्कृतिक लक्षण एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में कैसे फैलते हैं;
- प्रसारवाद की आवश्यक विशेषताओं की रूपरेखा;
- प्रसारवाद और संस्कृति–संक्रमण के बीच अंतर; तथा
- ब्रिटिश, जर्मन और अमेरिकी स्कूलों के प्रसार की समीक्षा करना।

2.0 परिचय

आप में से बहुत से लोग इस बात से अवगत होंगे कि एक कप में पानी की सतह पर स्याही की एक बूंद डालने पर या चाय की थैली को एक कप पानी में डुबो देने पर क्या होता है।

हम देखते हैं कि जैसे ही स्याही या चाय की थैली की बूंद कप में पानी के संपर्क में आती है तो इसका रंग इसकी उच्च सांद्रता के क्षेत्र से कम सांद्रता के क्षेत्र में फैलता है (यानी, स्याही/चाय की थैली की बूंद कप में भरे पानी में किनारे तक फैलती है)। हमारे उदाहरण में रंग के रूप में एक संस्कृति से संबंधित वस्तुओं और विचारों का अन्य संस्कृतियों में फैलाव हुआ है। हमारे दिन–प्रतिदिन के जीवन में हम उन वस्तुओं का उपयोग करते हैं जो हमसे दूर रहने वाले लोगों के हैं। वास्तव में हम उनमें से कुछ को नियमित रूप से अपनाने और उपयोग करने की प्रवृत्ति रखते हैं ताकि हम यह भूल जाएं कि वे कहीं और से आए हैं। आप नूडल्स (जो मूल रूप से चीन से संबंधित है, लेकिन विभिन्न तरीकों से तैयार किया गया है और भारत के विभिन्न हिस्सों में इसका सेवन किया जाता है) के बारे में सोच सकते हैं। रूचि और प्रासंगिकता के दो अन्य उदाहरण हैं; कागज़ (पहले चीन में आविष्कार किया गया था, जहां से यह रेशम मार्ग और दुनिया के अन्य हिस्सों में पश्चिम तक फैल गया था),

* **योगदानकर्ता**–प्रो. नीता माथुर, समाजशास्त्र संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

और फैक्स मशीन (पहले जर्मनी में विकसित की गई और अब दुनिया भर में उपयोग की जाती है)। वस्तुओं, रीति–रिवाजों, मान्यताओं, विचारों और मूल्यों का एक संस्कृति से दूसरी या अधिक संस्कृतियों तक संचरण को प्रसार कहा जाता है।

यहाँ पर दो प्रश्न उठते हैं (i) वास्तव में प्रसार कैसे होता है ? (ii) क्या प्रसार एकमात्र तरीका है, जिसके माध्यम से सांस्कृतिक लक्षण एक संस्कृति से दूसरी संस्कृति में फैलते हैं? प्रसारवाद यह मानता है कि एक स्थिर आबादी से दूसरे में या एक संस्कृति से दूसरे लोगों के प्रवास के माध्यम से सांस्कृतिक तत्वों का सीधे हस्तांतरण हुआ है। मान लीजिये की जनसंख्या A से B तक या जनसंख्या B से A तक या A से जनसंख्या C तक और इसी तरह से बहुत सारे जनसंख्या तक पहुँचने का जरिया/रास्ता हस्तांतरण है। हालांकि, प्रसार एकमात्र ऐसी प्रक्रिया नहीं है जिसके माध्यम से सांस्कृतिक लक्षणों का हस्तांतरण होता है। दूसरी प्रक्रिया जो प्रसार के करीब आती है वह संस्कृति संक्रमण है। रेडफील्ड, लिंटन और हर्स्कोविट्स (1936: 149–50) के अनुसार, 'संस्कृति–संक्रमण परिणाम उन घटनाओं को दर्शाता है जिसके परिणाम स्वरूप अलग–अलग संस्कृतियों वाले व्यक्तियों के समूह निरंतर पहली बार एक–दूसरे के संपर्क में आते हैं, इसके बाद दोनों समूहों के एक या तो दोनों समूहों के मूल सांस्कृतिक पद्धिति में परिवर्तन होते हैं'। जबकि प्रसार का तात्पर्य यह है की एक संस्कृति से दूसरे संस्कृति में सांस्कृतिक लक्षणों का फैलाव होता है और इस तरह से इस अर्थ में यह सांस्कृतिक लेन–देन का एक तरीका है। संस्कृति संक्रमण का तात्पर्य सीधे संपर्क के माध्यम से संस्कृतियों के बीच सांस्कृतिक लक्षणों के आदान–प्रदान को संदर्भित करना है जिससे दोनों संस्कृतियाँ बदल जाती हैं। दो समूहों के बीच संपर्क की स्थिति लोगों के समूहों के आप्रवासन के कारण उत्पन्न हो सकती है, किसी अन्य माध्यम से परिणाम स्वरुप एक आबादी या दोनों का सांस्कृतिक बोलबाला हो सकता है। यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि प्रसार में सांस्कृतिक तत्वों के आदान–प्रदान के लिए दबाव नही होता है जबकि सांस्कृतिक संक्रमण में तत्वों का आदान–प्रदान एक अनिवार्य विशेषता है।

उम्मीद के अनुरूप प्रसार दोनों संस्कृतियों में परिवर्तन नहीं करता है। हालांकि, संस्कृति संक्रमण में दोनों संस्कृतियाँ एक दूसरे से तत्वों को अपनाती हैं और इस तरह से परिवर्तन को प्रदर्शित करती हैं। हर्सकोविट्स (1955:742) निम्नलिखित शब्दों में प्रसार और सांस्कृतिक संक्रमण के बीच अंतर करते हैं, 'प्रसार, सांस्कृतिक हस्तांतरण का अध्ययन है जबकि सांस्कृतिक–संक्रमण प्रक्रिया में सांस्कृतिक हस्तांतरण का अध्ययन है। इसका मतलब है कि प्रसार यह मानता है कि संस्कृति के बीच संपर्क कुछ समय के दौरान हुआ जिसमें तत्वों को एक संस्कृति से दूसरी संस्कृति में स्थानांतरित किया गया। दूसरी ओर संस्कृति–संक्रमण, संस्कृतियों के बीच संपर्क से प्राप्त होता है जिसे प्रदर्शित किया जा सकता है।

रेशम मार्ग: इसे सिल्क रूट (रोड) के रूप में भी जाना जाता है और इसका तात्पर्य उन मार्गों की एक श्रृंखला को संदर्भित करता है जिसके माध्यम से संस्कृति और व्यापार एशिया और पश्चिम देशों के बीच मुख्य रूप से सैनिकों, भिक्षुओं, तीर्थयात्रियों और व्यापारियों के माध्यम से व्यापार और संस्कृति का हस्तांतरण करता है।

2.1 प्रसार की मूलभूत विशेषताएं

लिंटन (1936) के अनुसार, प्रसार तीन प्रक्रियाओं के माध्यम से होता है: क) नए सांस्कृतिक तत्वों या लक्षणों की प्रस्तुति; ख) समाज द्वारा इन सांस्कृतिक लक्षणों की स्वीकृति; और ग) स्वीकृत सांस्कृतिक लक्षणों को स्वीकार संस्कृति में एकीकृत करना। प्रसार की मूलभूत विशेषताएं निम्नलिखित हैं।

i) किसी भी सांस्कृतिक विशेषता का प्रसार आबादी के बीच संपर्क पर निर्भर करता है। एक दूसरे के निकट भौतिक समीपता में आबादी के बीच प्रसार की संभावना एक दूसरे से दूर स्थित आबादी के बीच की तुलना में अधिक होती है।

ii) लक्षण अनियमित रूप से और विभिन्न गति से अपने मूल केंद्रों से फैलते हैं। एक सांस्कृतिक विशेषता के प्रसार की प्रकृति और सीमा उस सहजता पर निर्भर करती है जिसके साथ इसे स्थानांतरित किया जा सकता है। हस्तांतरण में आसानी या जटिलता का स्तर समझने के स्तर पर निर्भर करता है। दो सांस्कृतिक लक्षणों की तुलना करें: एक प्राथमिक ज्ञान और एक जटिल सिद्धांत की। आप इस बात से सहमत होंगे कि प्राथमिक ज्ञान एक जटिल सिद्धांत की तुलना में तेजी से फैलेगा क्योंकि उत्तरार्द्ध की तुलना में पूर्ववर्ती को संवाद करना और समझना आसान है।

iii) प्राप्त समूह द्वारा एक सांस्कृतिक विशेषता की स्वीकृति संस्कृति के लक्षणों के साथ इसकी उपयोगिता और अनुकूलता पर निर्भर करती है जिसमें इसे अलग किया जा रहा है। वे सांस्कृतिक लक्षण जो किसी काम के नहीं हैं या प्राप्त संस्कृति में प्रचलित मान्यताओं और मूल्यों के विरोध में हैं, को अस्वीकार किए जाने की संभावना ज्यादा है। लिंटन (1936) ने अपाचे पियोट (एक तरह का कैक्टस) की प्रतिक्रिया का एक उदाहरण दिया। अपाचे ने कुछ जनजातियों द्वारा पियोट की पेशकश को अस्वीकार कर दिया। कारण यह था कि अपाचे का मानना था कि पियोट के सेवन से जो पैदा होगा और जिन लोगों को दिव्य दर्शन होंगे उन्हें शक्ति प्रदान की जाएगी। यह शक्ति अन्य दवा पुरुषों द्वारा चुराई जा सकती थी। अपाचे ने शक्ति के भय के लिए एक समूह में पियोट की खपत के नियमित पद्धिति को बढ़ावा नहीं दिया क्योंकि इससे मिलने वाली शक्ति को दूसरा कोई चुरा सकता था। दूसरा उदाहरण रेफ्रिजरेटर के प्रसार या टेलीविजन सेट का है। ऐसी वस्तुओं का प्रसार (यहां उन लोगों का जिक्र है जो बिजली की खपत बढ़ाते हैं) लोगों के घरों में बिजली के जोड़ (कनेक्शन) की उपलब्धता और दूसरों के बीच परिवार की प्रति व्यक्ति आय पर निर्भर करता है (जो उनकी लाभप्रदता निर्धारित करता है)।

iv) एक सांस्कृतिक विशेषता में परिवर्तन या नवाचार जो मूल सांस्कृतिक विशेषता के पीछे प्रसार के अंतराल से गुजरे हैं। क्षेत्र A में विकसित होने वाले हल के उदाहरण पर विचार करें और प्रसार की प्रक्रिया के माध्यम से B, C और D तक पहुंच गए हैं। अब क्षेत्र A के लोग हल (खेती करने का यन्त्र) की कुछ विशेषताओं में सुधार करते हैं। नई सुविधाएँ उतनी तेजी से नहीं फैलेंगी जितनी कि हल का मूल संस्करण था। उन्नत हल को सभी स्थानों पर पुराने को पहुंचने और बदलने में लंबा समय लगेगा।

v) एकल सांस्कृतिक लक्षणों का प्रसार होता है हालांकि उन सांस्कृतिक लक्षणों को जो कार्यात्मक रूप से संबंधित हैं एक साथ फैल जाते हैं। उदाहरण के लिए चाय का विचलन इसे पकाने के विभिन्न तरीकों से जुड़ा हुआ है। निश्चित रूप से प्रसार के दौरान, चाय के पकने के नए तरीके इसके प्रसार के स्थानों में विकसित हुए और ये भी फैल गए।

vi) एक सांस्कृतिक विशेषता का वितरण इसकी आयु का निर्धारण नहीं करता है। यह मान लेना सही नहीं है कि एक विशेषता जो अधिक व्यापक रूप से वितरित की जाती है उसकी उत्पत्ति पुरानी है जो कि शायद ही वितरित की जाती है क्योंकि कुछ लक्षण या लक्षणों का समूह अन्य की तुलना में तेजी से फैलता है। यह लक्षण की प्रकृति से निर्धारित होता है

अपाचे : अपाचे शब्द का उपयोग संयुक्त राज्य अमेरिका में अमेरिकी भारतीयों को सामूहिक रूप से संदर्भित करने के लिए किया जाता है।

पियोट : यह एक छोटा कैक्टस है जिसका सेवन करने पर इसके मनोसक्रिय (साइकोएक्टिव) प्रभाव होते हैं ।

अपनी प्रगति जाँचें 1

1) प्रसार की अवधारणा को समझाइए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) प्रसार और संस्कृति–संक्रमण के बीच क्या अंतर है?

.....

.....

.....

.....

.....

3) कौन–सी प्रक्रियाएँ हैं जिनके द्वारा प्रसार होता है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2.2 प्रसारवाद के स्कूल

प्रसारवाद का मूल आधार अक्सर विकासवादी सिद्धांत के विपरीत होता है। जबकि विकासवादी सिद्धांत मानता है कि मानव रचनात्मक है और नवाचार अलग–अलग समाजों में स्वतंत्र रूप से विकसित किए जाएंगे (यही कारण है कि सभी समाजों से अपेक्षा की जाती है कि वे विकासवादी चरण के नवाचारों को विकसित करें) और अविवेकी और वे सांस्कृतिक लक्षण धारण करने की कोशिश करते है जो एक या एक से अधिक लेकिन विशिष्ट स्थानों पर उत्पन्न हुए हैं। प्रसारवाद ने इस सुझाव को चुनौती दी कि सभी समाज विकास के समान चरणों से गुजरते हैं। इसके बजाय प्रसारवादकों ने तर्क दिया कि प्रसार के विशिष्ट केंद्र हैं। संस्कृतिक केंद्र/केंद्रों से सांस्कृतिक लक्षण विभिन्न क्षेत्रों में फैलते है।

विशिष्ट केंद्र/केंद्रों से सांस्कृतिक लक्षणों के प्रसारवाद के मूल अनुकरण पर सहमति व्यक्त करते समय, प्रसारवादकों को अन्य मामलों में भिन्नता मिली। प्रसारवादियों के तीन प्रमुख स्कूल निम्नलिखित हैं:

2.2.1 प्रसारवाद का ब्रिटिश स्कूल

ब्रिटिश स्कूल के अनुसार प्रसारवाद के संस्थापक ग्रैफॉन इलियट स्मिथ थे। स्मिथ और उनके शिष्य विलियम जेम्स पेरी दोनों ने जोर देकर कहा कि संस्कृतियों की उत्पत्ति मिस्र में हुई थी। उन्होंने तर्क दिया कि संस्कृतियां, मिस्र से दुनिया के विभिन्न हिस्सों में फैलती हैं। आपकी यह जिज्ञासा हो सकती है कि स्मिथ ने मिस्र को ही सभी संस्कृतियों के केंद्र के रूप में क्यों पहचाना। स्मिथ एक जाने–माने शरीर–रचना विज्ञानी और शल्य चिकित्सक थे जो ममियों की शारीरिक रचना का अध्ययन करने के लिए मिस्र गए थे। वह मिस्रवासियों की ममीकरण की प्रक्रिया और उनके पिरामिड और पत्थर के बड़े स्मारकों से इतना प्रभावित थे कि उन्होंने (i)मिस्र में पत्थर के स्मारकों को इंग्लैंड में स्टोनहेंज की तरह मेगालिथिक (महापाषाण सम्बन्धी) संरचनाओं का अग्रदूत माना और कहा कि (ii) मिस्र पृथ्वी पर एकमात्र स्थान था जहाँ प्राचीन संस्कृति की उत्पत्ति हुई और दुनिया के अन्य हिस्सों में फैल गई।

उनके अनुसार मिस्र की संस्कृति में सूर्य पूजा और पत्थर के स्मारक महत्वपूर्ण थे। सिंचाई और कृषि, ममीकरण, पिरामिड और अन्य मेगालिथिक (पाषाण कालीन से सम्बंधित) संरचनाएं, कान छेदना और खतना प्रथा इत्यादि अन्य लक्षण थे। उन्होंने अन्य संस्कृतियों में भी इनकी तलाश शुरू की।

स्मिथ ने कहा कि मिस्र में बहने वाली नील नदी के किनारे की मिट्टी बहुत उपजाऊ थी। यहाँ जंगली जौ बहुतायत में उगती थी जो बाद में मिस्र के लोगों द्वारा खेती की जाती थी। जौ की खेती के लिए मिस्रवासियों ने सिंचाई की जलीय (हायड्रोलिक) प्रणाली विकसित की। इसलिए मिस्रियों ने मिट्टी के बर्तनों का आविष्कार किया और अन्न भंडार का निर्माण किया। बाद में आवासों में अन्नागार विकसित हुए। जब लोगों को भोजन और घर के बारे में चिंता करने की जरूरत नहीं थी तो उनके पास खाली समय था। उन्होंने इस खाली समय का उपयोग विभिन्न कौशल जैसे कि टोकरी, चटाई और बुनाई के विकास के लिए किया। इसके अतिरिक्त उन्होंने पहिया और हल, पालतू मवेशियों और विकसित धातु विज्ञान का आविष्कार किया। इसके बाद उन्होंने शहर और नगर स्थापित किए। कानून और शासन के लिए बड़े स्मारक सामने आए।

नील नदी लोगों के लिए सबसे महत्वपूर्ण संसाधन रही। राजा इस बात की भविष्यवाणी कर सकते थे कि नदी उनका ध्यान रखेगी और चूंकि, नदी उनके लिए बहुत महत्वपूर्ण थी इसलिए लोगों का मानना था कि उनका राजा सूरज का अवतार था और वह अमर था। इस वजह से उन्होंने राजा के मरने के बाद उसके मृत शरीर को ममी के रूप में संरक्षित किया।

जैसा कि एक उम्मीद थी (i) सूर्य–पूजा पर आधारित धर्म विकसित हुआ; और (ii) राजा के शरीर को किसी भी तरह से दूषित होने से बचाने के लिए अनुष्ठान, नृत्य, नाटक और संगीत का विकास हुआ। ये धर्म की शुरुआत थी। स्मिथ के अनुसार लगभग 4000 ईसा पूर्व मिस्र के लोगों ने कीमती धातुओं और कच्चे माल की तलाश में दुनिया के विभिन्न हिस्सों की यात्रा की। इसने उन्हें पथ प्रदर्शन के कौशल में महारत हासिल करने में सक्षम बनाया। विभिन्न स्थानों की यात्रा के दौरान वे दूर की भूमि में लोगों की संस्कृति के लक्षणों से गुजरे। ग्रैफॉन इलियट स्मिथ और पेरी की स्थिति यह बताती है कि मिस्र सभी संस्कृतियों का पालना था और इसे प्रसारवाद के रूप में जाना जाता है। पेरी अब तक काहिरा (काइरो) के सूर्य मंदिरों से बहुत प्रभावित थे। उन्होंने कहा कि मिस्र से विभिन्न संस्कृतियों के लिए कला और शिल्प के प्रसारवाद की प्रक्रिया अनिवार्य रूप से उनके पतन के साथ थी। लेकिन, ब्रिटिश स्कूल ऑफ डिफ्यूजन के साथ केवल दो प्रसारवादी स्मिथ और पेरी ही नहीं थे।

अन्य प्रसारवादी भी थे जिन्होंने केवल मिस्र के महत्व पर जोर नहीं दिया था लेकिन यह भी सुनिश्चित किया कि संस्कृतियों के बीच समानता और अंतर को अन्य सांस्कृतिक समूहों के साथ संपर्क के संदर्भ में समझाया जा सकता है जो मिस्र में नहीं थे। इस दृष्टिकोण को मध्यम प्रसारवाद कहा जाता है। मध्यम प्रसारवाद के प्रमुख प्रस्तावक डब्ल्यू एच आर रिवर्स थे। रिवर्स ने दुनिया के विभिन्न हिस्सों के लोगों का अध्ययन किया। उन्होंने टॉरेस स्ट्रेट आइलैंडर्स, टोडा (दक्षिण भारत की नीलगिरि पहाड़ियों में आदिवासी समुदाय) और मेलनेसियन और पॉलिनेशियन का अध्ययन किया। रिवर्स ने स्पष्ट किया कि मेलानेशिया सहित द्वीपों के बीच समानताएं और अंतर विशेष रूप से प्रसारवाद की प्रक्रिया के कारण थे जो उनके बीच पलायन की एक श्रृंखला के माध्यम से हुआ था। रिवर्स ने सुझाव दिया कि सांस्कृतिक परिसर लगातार प्रवास के माध्यम से फैलते हैं। उन्होंने कहा कि, प्रवासन से सांस्कृतिक लक्षण फैलते हैं और उनमें से कुछ का नुकसान भी होता है। उदाहरण के लिए, द्वीपों पर डोंगी नहीं मिले तो रिवर्स ने समझाया कि द्वीप समूह पर डोंगी बनाने वाले समाज मर गये होंगे। उन्होंने ओशियनियन संस्कृति के साथ–साथ सांस्कृतिक परिसरों के संदर्भ में अध्ययन किया। दिलचस्प बात यह है कि उन्होंने ऑस्ट्रेलिया में प्रवास की श्रृंखला के दौरान पांच अलग–अलग दफन अनुष्ठानों की उपस्थिति को देखा।

उनके अनुसार, बेहतर तकनीक से लैस पुरुषों के छोटे समूह ऑस्ट्रेलिया चले गए वहाँ बस गए और स्थानीय महिलाओं से शादी कर ली। इसके निम्नलिखित परिणाम थे: (i) चूंकि प्रवासी संख्या में कम थे उनके नस्लीय तनाव को मूल जनसंख्या की भौतिक विशेषताओं में अभिव्यक्ति नहीं मिल सकी जिसका अर्थ है कि बच्चों ने अपने पूर्वजों की नस्लीय विशेषताओं को खो दिया, और (ii) प्रवासियों की मूल भाषा खो गई क्योंकि उन्हें मूल निवासियों के साथ संवाद के लिए स्थानीय बोलियों को अपनाना पड़ा।

वास्तव में प्रवासित पुरुषों ने अपने जीवन का अपना रास्ता खो दिया। हालांकि, उनके साथ मजबूत भावनात्मक लगाव के कारण उन्होंने अपने स्वयं के दफन संस्कार को

बरकरार रखा। जो कुछ अस्पष्ट रहता है वह स्थानीय लोगों द्वारा अपनी दफन प्रथाओं को छोड़ने और प्रवासियों के अनुष्ठानों को अपनाने के कारण है।

प्रसारवाद का ब्रिटिश स्कूल कई कमियों से पीड़ित था। उनमें से कुछ निम्नलिखित हैं: (i) इसकी बुनियादी धारणा है कि मिस्र के लोगों के अलावा, लोग बड़े पैमाने पर आविष्कारक नहीं रहे हैं, को जोरदार चुनौती दी गई है; (ii) अति प्रसारवादी और मध्यम प्रसारवादियों दोनों ने मान लिया कि संस्कृति परिसर (संकुल) फैले है। उनके बीच के अंतर का प्राथमिक तर्क था कि मिस्र एकमात्र संस्कृति का केंद्र बिंदु था जबकि बाद में तर्क दिया गया कि अन्य संस्कृति के अन्य केंद्र बिंदु भी थे। इस प्रस्ताव को स्वीकार करना मुश्किल है। क्योंकि, कुछ सांस्कृतिक लक्षणों का स्वतंत्र रूप से लोगों द्वारा आविष्कार किया जा सकता था; (iii) यह कई विभेदों की संभावना के लिए जिम्मेदार नहीं है; और (iv) यह सांस्कृतिक विशेषता के साथ संलग्न अर्थ और महत्व को संज्ञान नहीं देता है।

2.2.2 प्रसारवाद का जर्मन–ऑस्ट्रियन स्कूल

प्रसारवाद के जर्मन–ऑस्ट्रियन स्कूल की स्थापना फ्रेड्रिक रैटजेल ने की थी। इसके अन्य प्रस्तावकों में लियो फ्रोबेनियस, फ्रिट्ज ग्रेबनर और फादर विथमेल श्मिट प्रमुख थे। जर्मन–ऑस्ट्रियन प्रसारवादिओं का मानना था कि (i) संस्कृति के केंद्र एक से ज्यादा थे; (ii) संस्कृति परिसरों कण और टुकड़ों के बजाय समग्र लक्षण के माध्यम से समग्रता में अलग है। उन्होंने यह माना कि संस्कृतियों के बीच समानता इतिहास में कुछ समय उनके बीच बने संपर्क के कारण थी। यहां तक कि एक–दूसरे से दूर स्थित संस्कृतियों को भी माना जाता था कि उनके बीच समानता होने पर कभी–कभी संपर्क में आते हैं। इस प्रकार संस्कृतियों के बीच समानता का प्रसार किया गया। उन्होंने दो प्रकार की समानताओं की पहचान की। पहले उदाहरण के लिए भाले के नुकीलेपन के कार्यात्मक कारणों को आधार बनाया गया था। अर्थात, भाले में हर जगह तेज और नुकीले बिंदु होंगे क्योंकि अगर ऐसा नहीं होता तो वे बेकार होते। समानता के अन्य प्रकार ऐतिहासिक संपर्क पर आधारित थे। उदाहरण के लिए, दो संस्कृतियों में मातृसत्तात्मक वंश की उपस्थिति।

रैटजेल ने 'क्राइटीरीअन ऑफ फॉर्म' का प्रस्ताव दिया, जिसे निम्न प्रकार से कहा जा सकता है: दो संस्कृति तत्वों के बीच समानता जो स्वतः प्रकृति, सामग्री या वस्तुओं या वस्तुओं के उद्देश्य से उत्पन्न नहीं होती हैं उनकी व्याख्या की जानी चाहिए, जो कि दूरी की परवाह किए बिना प्रसार से उत्पन्न होती है, जो दो उदाहरणों को अलग करती है '(हैरिस 1968: 384)। वास्तव में, रैटजेल ने धनुष–बाण में समानता की जांच की धनुष के तारों के बन्धन के तंत्र को समझाया जिस सामग्री से उन्हें बनाया गया है, कौन सी सुविधाएँ अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया में तीरों से जुड़ी हैं। उन्होंने कहा कि चूंकि, इन विशेषताओं का धनुष और तीर के साथ काम नहीं करना था इसलिए यह निष्कर्ष निकालना सुरक्षित था कि समानताएं ऐतिहासिक संपर्क के कारण अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया के बीच प्रसारवाद के कारण थीं। दूसरे शब्दों में उन्होंने समझाया कि समानता कार्यात्मक कारणों से नहीं है (यानी बनावट का कारण एक जैसा इसलिए नही था कि वो शिकार के लिए उपर्युक्त था बल्कि उनके बीच समानता (i) ऐतिहासिक संबंध के कारण थी; और (ii) दो क्षेत्रों के लोगों के मनोवैज्ञानिक श्रृंगार में समानता के कारण। श्मिट द्वारा रैटजेल की 'क्राइटीरीअन ऑफ फॉर्म' को 'गुणवत्ता की कसौटी' कहा गया।

रैटजेल ने कहा कि सांस्कृतिक लक्षण विलक्षण रूप से फैलते हैं लेकिन संस्कृति परिसर प्रवास के माध्यम से फैलते हैं। उन्होंने जोर देकर कहा कि दुनिया भर में प्रवास और प्रसारवाद के क्षेत्रों को मापा जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि सांस्कृतिक लक्षण, सरल या जटिल हो सकते हैं जब वे अलग हो जाते हैं।

जैसे रैटजेल ने 'आकार का मानदंड (क्राइटीरीअन ऑफ फॉर्म)' प्रस्तावित किया, लियो फ्रोबेनियस नाम के उनके एक शिष्य ने 'मात्रा का मानदंड' (क्राइटीरीअन ऑफ क्वांटिटी) प्रस्तावित की थी। फ्रोबेनियस ने देखा कि कुछ सांस्कृतिक लक्षण एक साथ फैलते हैं। इस आधार पर हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि जब दो समान संस्कृति एक साथ पाई जाती हैं तो दो संस्कृति के बीच प्रसार होता है यह 'मात्रा का मानदंड' स्थापित करती है कि जब हम उनमें समान लक्षण देखते हैं तो दो या अधिक संस्कृतियों के बीच प्रसार होता है। आइए एक बार फिर पश्चिम अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया में धनुष और तीर के उदाहरण का उल्लेख करें। दो संस्कृतियों में धनुष और तीर की समानता घर के प्रकारों, ढालों, कपड़ों और ढोल में समानता के साथ थी। संस्कृतियों के बीच समान लक्षणों की संख्या में वृद्धि के साथ, उनके बीच प्रसारवाद की संभावना बढ़ जाती है।

जर्मन–ऑस्ट्रेलियन प्रसारवादी, *कुल्टर्क्रेईस* ('सांस्कृति चक्र या सांस्कृति केंद्र) के सिद्धांत लेकर आये ताकि यह समझाया जा सके कि वास्तव में प्रसार कैसे होता है। यह स्वीकार किया कि सभी संस्कृतियों की उत्पत्ति विशिष्ट सांस्कृतिक केंद्रों में हुई थी। यहां से वे एक तरह से बड़े चक्र के माध्यम से फैल गए जिससे अतिरिक्त सांस्कृतिक क्षेत्रों को शामिल किया गया। माना जाता है कि मूल सांस्कृतिक केंद्रों को असतत विशेषताओं द्वारा पहचाना जाता था जिन्हें 'सांस्कृतिक परिसर' कहा जाता था। प्रसारवादियों को अपने मूल के विशिष्ट केंद्रों से सांस्कृतिक लक्षणों के प्रसार का पता लगाना था। रैटजेल और फ्रोबेनियस की पहल, कुल्टर्क्रेइस की धारणा को ग्रेबनेर और श्मिट द्वारा आगे बढ़ाया गया। ग्रैबनेर एक संग्राहलय विज्ञानी थे जो मुख्य रूप से ओशिनिया में और बाद में दुनिया के विभिन्न हिस्सों की भौतिक संस्कृति में समानता से रुचि रखते थे। रैटजेल के 'आकार के मानदंड' और फ्रोबेनियस के 'मात्रा के मानदंड' को वह एक साथ लाएं और इसे एक साथ प्रस्तावित किया।

उनके अनुसार, कोई भी दो संस्कृतियां रूपों और मात्रा की संभावना, दोनों का आकलन करने में महत्वपूर्ण थी और ऐतिहासिक रूप से संबंधित थीं। उन्होंने कहा कि एशिया वह क्षेत्र था जो मानव जाति के अधीनं था। उन्होंने भाषा, उपकरण और संस्कृति के अन्य तत्वों का आविष्कार किया। बाद में उन्होंने खुद को समुदायों में व्यवस्थित किया और दुनिया के विभिन्न हिस्सों में स्वतंत्र रूप से चले गए (पहले भूमि मार्गों से और बाद में समुद्र के माध्यम से)। दुनिया के विभिन्न हिस्सों में यात्रा और बसने के दौरान, उन्होंने अपनी संस्कृतियों को विकसित किया। अब अलग–अलग क्रियज क्रेकरिअजे थे (यानी, प्रत्येक समुदाय की विशिष्ट संस्कृति)। ग्रेबनर के अनुसार एक संस्कृति के सभी आयाम समान गति से विकसित नहीं हुए। उन्होंने समझाया कि सरल नातेदारी प्रणाली की विशेषता वाली संस्कृति जटिल प्रौद्योगिकी का प्रदर्शन क्यों कर सकती है।

श्मिट ने एक जीवित जीव के साथ कुल्टर्करे या 'संस्कृति चक्र' की तुलना की और बताया कि जिस तरह एक जीवित जीव अलग–अलग हिस्सों से बना होता है जो एक–दूसरे से परस्पर जुड़े होते हैं उसी प्रकार कुल्टर्क्रेसी में अर्थव्यवस्था, भौतिक

संस्कृति, सामाजिक जीवन, रीति–रिवाज और धर्म शामिल होते हैं, जो सभी एक–दूसरे से जुड़े होते हैं। एक 'संस्कृति चक्र' अपने आप में पूर्ण है हालांकि अगर इसकी जरूरतों में से एक को आंतरिक रूप से पूरा नहीं किया गया था तो यह एक अन्य संस्कृति से इस आवश्यकता को पूरा करने के लिए एक विकल्प उधार लेता है। जब कोई विकल्प की संख्या काफी बड़ी हो जाती है तो एक बड़ा संस्कृति चक्र बन जाता है। स्पष्ट है, एक संस्कृति परिसर समग्रता और पूर्णता के रूप में प्रसार करता है। यह उन संस्कृतियों की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए तत्वों को अपनाता है जिनके यह संपर्क में आता है।

जर्मन–ऑस्ट्रेलियाई प्रसारवादियों के खिलाफ प्रमुख आलोचना थी: (i) लक्षण की जटिलता पर जरुरत से ज्यादा ज़ोर देना। इस संभावना से पूरी तरह इंकार किया गया कि कुछ लक्षण स्वतंत्र रूप से उत्पन्न और फैल सकते हैं; (ii) लक्षणों की भूलभुलैया जटिल है जिसे सुलझाना और समझना आसान नहीं है; (iii) यह विचार कि सभी दुनिया की सभी संस्कृतियाँ कुछ मूल संस्कृतियों से ली गई हैं और इसे स्वीकार करना कठिन है; और (iv) प्रत्येक संस्कृति के साथ कुछ तत्वों का जुड़ाव मनमाना और व्यक्तिपरक लगता है।

अपनी प्रगति जाँचें 2

4) 'आकार के मानदण्ड' और 'मात्रा के मानदण्ड' में क्या अंतर है?

.....

.....

.....

.....

.....

5) कुल्टर्क्रेईस से आप क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

2.2.3 प्रसारवाद का अमेरिकन स्कूल

अमेरिकी स्कूल के अनुसार प्रसार की नींव फ्रांज बोऑस ने रखी थी जो जर्मनी में पैदा और शिक्षित हुए थे। उम्मीद के अनुसार, उनके विचार प्रसारवाद के जर्मन स्कूल से प्रभावित थे। बोऑस के अनुसार प्रत्येक सांस्कृतिक समूह का अपना इतिहास था, जिसमें स्वयं का विकास और उस पर दूसरों के प्रभाव शामिल थे। बोऑस का मानना था कि संस्कृति स्वतंत्र रूप से विकसित हुई है। इसलिए कई संस्कृतियां हैं और प्रत्येक संस्कृति अपने भूगोल, जलवायु, पर्यावरण, संसाधनों और अधिग्रहण का परिणाम है। मानवविज्ञान से पहले का कार्य इतिहास को अभिलिखित करना और दस्तावेज बनाना था। इसमें विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्रों में सांस्कृतिक लक्षणों के समूहों की तुलना

करना और फिर इन सांस्कृतिक लक्षणों के वितरण को दर्शाना प्रमुख था। एक भौगोलिक क्षेत्र में सांस्कृतिक लक्षणों के विभिन्न समूहों के भूखंड सांस्कृतिक अधिग्रहण के संकेत हैं और विशिष्ट संस्कृतियों के इतिहास के पुनर्निर्माण में सक्षम हैं। संभवतः बोऑस संस्कृति को लक्षणों के एक संयोजन के रूप में मानते हैं और चूंकि लक्षण का एक जटिल अतीत है उन्होंने अनुमान लगाया कि संस्कृतियों का अपना अनूठा इतिहास है।

अमेरिकी प्रसारवादकों का मानना था कि लोग उन संस्कृतियों के तत्वों को सीखना और अधिग्रहण करना चाहते हैं जिनके संपर्क में वे आते हैं। संपर्क की अवधि और आवृत्ति बढ़ने पर सीखने और अधिग्रहण करने की संभावना बढ़ जाती है। उन्होंने संस्कृति क्षेत्र 'की अवधारणा का प्रस्ताव किया जो भौगोलिक क्षेत्र को संदर्भित करता है जिसमें समान संस्कृतियां पाई जाती थीं। मूल प्रस्ताव यह था कि संस्कृति क्षेत्रों में सांस्कृतिक लक्षणों के वितरण की माप संस्कृतियों और विशेष रूप से मूल अमेरिकी संस्कृतियों के बीच समानता और अंतर की व्याख्या प्रदान करेगी।

क्लार्क विस्लर के अनुसार, संस्कृति क्षेत्रों की पहचान करने के लिए निर्वाह एक महत्वपूर्ण साधन था। इसका कारण सरल था: निर्वाह स्वयं अस्तित्व का आधार था और संस्कृति के अन्य पहलुओं को प्रभावित करता था। निम्नलिखित निर्वाह के आधार पर क्रमशः कारिबू; बाइसन; सैल्मन; जंगली बीज; पूर्वी मक्का; गहन कृषि; मनिओक; और गुआनाको ने आठ संस्कृति क्षेत्रों–एस्किमो, मैकेंजी (और पूर्वी वुडलैंड का उत्तरी भाग) की पहचान की; मैदान; उत्तरी प्रशांत तट; पठार; कैलिफोर्निया; दक्षिण पूर्व, पूर्वी वुडलैंड (उत्तर गैर–कृषि भाग को छोड़कर); दक्षिण पश्चिम, नहुआ–मेक्सिको, चिबाचा, इंका पेरू; अमेजॅन, एंटिल्स; और गुआनाको। प्रत्येक संस्कृति क्षेत्र में एक संस्कृति केंद्र था जो उसकी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक गतिविधियों को नियंत्रित करता था। विसलर ने आयु–क्षेत्र की परिकल्पना का भी प्रस्ताव दिया था। जिसके द्वारा उनका मतलब था कि एक संस्कृति केंद्र के चारों ओर अधिक व्यापक रूप से वितरित किया जाने वाला एक लक्षण कम व्यापक रूप से वितरित किया गया है। हालांकि, एडवर्ड सेपिर ने आगाह किया कि (i) सांस्कृतिक लक्षणों का प्रसारवाद एक दिशा में दूसरे की तुलना में तेजी से हो सकता है (ii) सबसे पुराना सांस्कृतिक लक्षण केंद्र में बड़े पैमाने पर परिवर्तन से गुजर सकता है (यानी इसके मूल स्थान पर) इस हद तक कि उत्पत्ति का वास्तविक बिंदु गलत हो सकता है; और (iii) सांस्कृतिक विशेषता के वितरण के क्षेत्र में प्रवासन से संस्कृति वितरण के बारे में गलत निष्कर्ष निकल सकता है।

अल्फ्रेड लुई क्रोबेर ने सुझाव दिया कि संस्कृति क्षेत्र को अपने सांस्कृतिक संपर्क के व्यापक ढांचे में देखा जाना चाहिए। उन्होंने भौगोलिक और पारिस्थितिक विचारों और कई अन्य कारकों के आधार पर मूल अमेरिका के छह संस्कृति क्षेत्रों की पहचान की। ये संस्कृति क्षेत्र थे : आर्कटिक जोन, नॉर्थ–वेस्ट कोस्ट, साउथ–वेस्ट कोस्ट, इंटरमीडिएट और इंटर–माउंटेन एरिया, ईस्ट और नॉर्थ एरिया और मैक्सिको–सेंट्रल अमेरिकन क्षेत्र। वास्तव में उन्होंने संस्कृति क्षेत्र के बजाय 'संस्कृति उत्कर्ष' (कल्चरल क्लाइमेक्स) शब्द का उपयोग करने के पक्ष में तर्क दिया। वह संस्कृति के उत्कर्ष को परिभाषित करता है' जिस बिंदु से सांस्कृतिक सामग्री का सबसे बड़ा विकिरण हुआ है' (1952:39)। संस्कृतियों के संगठन का स्तर बढ़ता है क्योंकि वे धार्मिक पदानुक्रमों, विस्तृत मानदंडों और रीति–रिवाजों आदि को विकसित करने के अर्थ में अधिक समृद्ध हो जाते हैं। जैसे–जैसे संस्कृतियाँ समृद्ध होती जाती हैं वे नई सामग्री या लक्षणों को

आत्मसात करने और उन्हें शामिल करने में सक्षम होते हैं जिन्हें अधिग्रहण या आंतरिक रूप से विकसित किया जा सकता है।

संस्कृति क्षेत्र की अवधारणा के कारण अमेरिकन स्कूल के प्रसारवाद की आलोचना की गई है: (i)जिसमें यह तर्क दिया जाता है कि सांस्कृतिक लक्षण जो संस्कृति क्षेत्र की अवधारणा के बहुत मूल का गठन करते हैं वह स्वयं स्पष्ट रूप से समझ में नहीं आते हैं। आलोचकों ने सांस्कृतिक विशेषता का गठन करने पर चिंता व्यक्त की है। उदाहरण के लिए जहाज पर विचार करें। एक जहाज को साधारण इकाई के रूप में माना जाना चाहिए या बैठने की जगह की प्रकृति और स्वरुप, उसमें सजावट आदि जैसे लक्षणों के संयोजन के रूप में (ii) समान महत्व प्रत्येक सांस्कृतिक विशेषता को सौंपा गया था। एक जहाज में नाविको की संख्या, एक पुरुष की पत्नियों की संख्या या एक महिला के पति की संख्या थी, उदाहरण के लिए निदान या निर्धारण के रूप में अब तक समान मूल्य रखते हैं। उदाहरण से पता चलता है की तथ्य यह है कि केवल इस तरह के लक्षण के रूप में ध्यान में रखा गया था जबकि यह एक संस्कृति में प्रदर्शित कार्यों की अनदेखी की गई थी। (iii) संस्कृति क्षेत्रों को निर्धारित करने के लिए बड़ी संख्या में मानदंडों की पहचान की गई थी। इन मानदंडों के आधार पर कई संस्कृति क्षेत्रों को अंकित किया गया। हालांकि, संस्कृति के बारे में प्रसारवादकों के बीच कोई समझौता नहीं हुआ था (iv) संस्कृति क्षेत्रों के बीच सहजीवी बातचीत को काफी हद तक नज़रअंदाज किया गया। (v) भिन्न समयों में विभिन्न संस्कृतियों को शरण देने वाली भौगोलिक परिस्थितियों पर ध्यान नहीं दिया गया। (vi) संस्कृति क्षेत्रों के भीतर मुक्त प्रसारवाद को विभिन्न संस्कृति क्षेत्रों में सांस्कृतिक लक्षणों की स्वीकृति के प्रतिरोध और कठिनाइयों की अनदेखी की गई है।

प्रसारवाद के अमेरिकी स्कूल की एक आलोचना आयु–क्षेत्र की परिकल्पना से संबंधित है:

I) किसी विशेषता के साथ उसके वितरण की आयु को सहसंबंधित करना उचित नहीं है। यह निरर्थक है क्योंकि लक्षण लगातार नहीं फैलते हैं, और

II) यह इस तथ्य की अनदेखी करता है कि एक गुण का प्रसारवाद अन्य संस्कृति में इसकी ग्रहणशीलता पर निर्भर करता है।

> सांस्कृतिक विशेषता: यह एक संस्कृति की मूल इकाई है। प्रसारवादी (डिफ्यूजनवादी) सांस्कृतिक विशेषता को सांस्कृतिक संचरण की एक इकाई मानते हैं। दो इकाईयां हैं; अनुभवजन्य (यानी, ऐसी चीजें जिन्हें छुआ और धारण किया जा सकता है, जैसे, एक जार) और सांकेतिक इकाइयाँ (यानी, वर्णन, विचार, विश्वास आदि जो किसी चीज को चिह्नित करती हैं या वे प्रकृति में सैद्धांतिक या विश्लेषणात्मक हो सकती हैं)।

अपनी प्रगति जाँचें 3

6) आयु–क्षेत्र परिकल्पना क्या है? इसकी रूपरेखा तैयार करें।

.....

.....

.....

7) अमेरिकी स्कूल के अनुसार प्रसार के प्रमुख सिद्धांत क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

2.3 सारांश

इस इकाई में हमने संस्कृतियों के बीच समानता कैसे और क्यों पाई जाती है, इसका विवरण प्राप्त किया। हमने प्रसारवाद के तीन स्कूलों के साथ परिचित हुए। हालांकि, उनमें से कोई भी यह नहीं समझा पाया है कि कुछ लक्षण कैसे और क्यों उत्पन्न होते हैं और हम संस्कृति में समानता के लिए कैसे एक दूसरे के संपर्क में आते हैं? इसकी सीमा के बावजूद, प्रसारवादी स्कूल ने लंबे समय तक मानवविज्ञानियों का ध्यान आकर्षित किया। साथ ही यह उन प्रश्नों का उत्तर भी प्रदान करता है जिसने इसे उत्पन्न किया है, इसने मानवविज्ञान में नए प्रतिमानों और सिद्धांतों के लिए प्रोत्साहन भी प्रदान किया हैं।

2.4 संदर्भ

Harris, M. (1968).The Rise of Anthropological Theory. London: Routledge and Kegan Paul. Herskovits,M.J.(1955).Cultural Anthropology. New Delhi: Oxford and IBH Publishing Company.

Kroeber, A. L. (1952). The Nature of Culture. Chicago: University of Chicago Press.

Linton, R. (1936). The Study of Man: An Introduction. New York: Appleton-Century-Crofts. Mathur, N. (nd). 'Diffusion of Culture: British, German-Austrian, and American Schools' http://nsdl.niscair.res.in/jspui/bitstream/123456789/156/1/PDF%207.3 Diffusion.pdf Redfield, R., R. Linton and M. J. Herskovits. (1936). Memorandum on the Study of Acculturation. American Anthropologist xxxviii: 149-152

2.5 आपकी प्रगति की जाँच करने के लिए उत्तर

1) प्रसार का तात्पर्य सांस्कृतिक लक्षणों के हस्तांतरण से है।

2) प्रसारवाद की अवधारणा की विस्तृत व्याख्या के लिए और प्रसारवाद और संस्कृति संक्रमण के बीच अंतर के लिए अनुभाग 2.1 का सन्दर्भ ले।

3) लिंटन के अनुसार प्रसार निम्नलिखित प्रथाओं के माध्यम से होता हैः नए सांस्कृतिक तत्वों या लक्षणों की प्रस्तुतिय समाज द्वारा इन सांस्कृतिक लक्षणों की स्वीकृति और स्वीकृत संस्कृति में स्वीकृत सांस्कृतिक लक्षणों का एकीकरण।

4) रचना या आकार का मानदंड यह स्थापित करता है कि दो संस्कृति तत्वों के बीच समानता प्रकृति, सामग्री, या लक्षण या वस्तुओं के उद्देश्य के कारण नहीं है जिसका अर्थ प्रसार से उत्पन्न होना चाहिए। यह दूरी के कारण है जो उन्हें अलग करता है। दूसरी ओर 'मात्रा का मानदंड', यह स्थापित करता है कि जब समान लक्षण पाए जाते हैं तो दो या दो से अधिक संस्कृतियों के बीच इसे प्रसारवाद कहा जा सकता है।

5) कुल्टर्केइस की अवधारणा के लिए अनुभाग 2.2.2 देखें।

6) एक संस्कृति विशेषता के सापेक्ष उम्र का पता लगाने के लिए विसलर द्वारा आयु–क्षेत्र परिकल्पना प्रस्तावित की गई थी। आयु–क्षेत्र की परिकल्पना बताती है कि एक विशेषता जो अधिक व्यापक रूप से वितरित की जाती है उसे सीमित वितरण से अधिक पुरानी माना जा सकता है। आयु–क्षेत्र की परिकल्पना में मुख्य अवगुण पहले हैं क्योंकि लक्षण इसे लगातार नहीं फैलाते हैं। इसके वितरण के साथ एक विशेषता यह है कि यह आयु को सहसंबंधित करने के लिए उपयुक्त नहीं हैय दूसरा यह इस तथ्य के लिए जिम्मेदार नहीं है कि एक गुण का प्रसार अन्य संस्कृति में इसकी ग्रहणशीलता पर निर्भर करे।

7) प्रसारवाद के अमेरिकी स्कूल के प्रमुख सिद्धांतों के लिए अनुभाग 2.3.3 देखें।

इकाई 3 संस्कृति क्षेत्र के सिद्धांत*

इकाई की रूपरेखा

3.0 परिचय

3.1 विचार का ऐतिहासिक प्रक्षेप पथ

3.1.1 एकरेखीय क्रमिक विकास की आलोचना

3.1.2 जैविक विज्ञान और संग्रहालय विज्ञान का प्रभाव

3.2 सैद्धांतिक संदर्भ

3.2.1 ब्रिटिश स्कूल का विचार

3.2.2 जर्मन स्कूल

3.2.3 अमेरिकी स्कूल और संस्कृति क्षेत्र सिद्धांत

3.3 'संस्कृति क्षेत्र की अवधारणा' ने अपना महत्त्व क्यों खो दिया?

3.4 सारांश

3.5 संदर्भ

3.6 आपकी प्रगति की जाँच करने के लिए उत्तर

अधिगम के उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद, शिक्षार्थी निम्नलिखित बिंदुओं को समझने में सक्षम होंगेः

- संस्कृति क्षेत्र की अवधारणा के ऐतिहासिक, सैद्धांतिक और पद्धतिगत महत्व का पता लगाना;
- विभिन्न विद्वानों जिनके कार्यों ने संस्कृति क्षेत्र के सिद्धांतों और अवधारणाओं का निर्माण किया, के योगदान को समझना; तथा
- संस्कृति क्षेत्र की अवधारणा ने अपना महत्व क्यों खो दिया का आलोचनात्मक रूप से आकलन करना।

3.0 परिचय

प्रायः यह देखा गया है कि पड़ोसी संस्कृतियां सामान्य सांस्कृतिक लक्षण साझा करते हैं जिनमें भोजन, परिधान पद्धति, त्योहार, अनुष्ठान और समारोह शामिल हो सकते हैं। लक्षणों की यह समानता अक्सर सांस्कृतिक झुकाव (अधिक स्पष्ट या प्रमुख सांस्कृतिक प्रदर्शन/अभिव्यक्ति) के आधार पर भौगोलिक क्षेत्रों की परिभाषा में परिणत होती है।

उदाहरण के लिए, कोई अक्सर पंजाबी संस्कृति शब्द के बारे में सुनता है या भारत के उत्तर में पंजाबी संस्कृति का प्रतिनिधित्व किया जाता है, ऐसा क्यों है? क्या भारत का उत्तर या पंजाब का भौगोलिक क्षेत्र वास्तव में एक समरूप संस्कृति है? यदि नहीं, तो ऐसा क्यों है कि उन्हें ऐसा कहा जाता है, और इसने कैसे और क्यों सांस्कृतिक लक्षण साझा किए? संस्कृतियों का भूगोल (बड़े पैमाने पर) के साथ संबंध क्यों मिलता है?

* **योगदानकर्ता**–डॉ. इंद्राणी मुखर्जी पोस्ट–डॉक्टोरल फेलो, मानवविज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।

इसके संभावित उत्तरों में से एक उत्तर यह है कि भाषा, सामाजिक संस्थानों, भौतिक संस्कृति और यहां तक कि सामाजिक व्यवहार पद्धति जैसी सांस्कृतिक जानकारी का एक आकस्मिक वर्गीकरण भी विशिष्ट क्षेत्रों के बीच कुछ समानताएं पैदा करती हैं।

संस्कृति क्षेत्र की अवधारणा ने इस तरह के आकस्मिक अवलोकनों को एक मानवशास्त्रीय सिद्धांत के रूप में स्वीकार्य बनाने के लिए एक विधि प्रदान करने का प्रयास किया। प्रसार और ऐतिहासिकता के सिद्धांतों के साथ, संस्कृति क्षेत्र की अवधारणा को 1900 के दशक की शुरुआत में विकसित किया गया था। यह उस समय के पश्चिमी संदर्भ में आधारित था जब यूरोपीय शक्तियाँ अभी भी शेष विश्व का औपनिवेशिकरण कर रही थीं। एक विषय के रूप में मानवविज्ञान पहले से ही स्वयं को 'अन्य' संस्कृति (आमतौर पर उस समय 'आदिम' कहा जाता है) के अध्ययन के रूप में स्थापित कर रहा था। हालाँकि, अध्ययन के भीतर यह अहसास था कि पश्चिमी अन्वेषण ने कई 'अन्य' संस्कृतियों की खोज की थी, लेकिन उपनिवेशीकरण की प्रक्रिया भी इन संस्कृतियों की संख्या को ह्रास और विलुप्त होने की ओर ले जा रही थी। इसमें, मानवविज्ञानी ने इन 'विलुप्त' संस्कृतियों से जानकारी का दस्तावेजीकरण करने की तत्काल आवश्यकता को पहचाना। अमेरिकी मानवविज्ञानी, अर्थात् फ्रांज बोआस और उनके छात्रों ने उत्तरी अमेरिका की 'विलुप्त' मूल संस्कृतियों के बारे में व्यापक क्षेत्रकार्य करके भारी मात्रा में आंकड़े एकत्र किए और इस क्षेत्र में अग्रणी कार्य किया। हालांकि, इन आंकड़ों को व्यवस्थित करने के लिए कोई ढांचा नहीं था। स्थानीय सांस्कृतिक लक्षणों के अनुभवजन्य आंकड़ों के वर्गीकरण के कारण संस्कृति क्षेत्र की अवधारणा का जन्म हुआ था।

संस्कृति क्षेत्र की अवधारणा का पहली बार नृवंशविज्ञानी क्लार्क विस्लर द्वारा उपयोग किया गया था ताकि उत्पन्न होने वाली जानकारी के लिए सैद्धांतिक ढांचा प्रदान किया जा सके। एक संस्कृति क्षेत्र को एक भौगोलिक/सांस्कृतिक क्षेत्र के रूप में परिभाषित किया गया था, जिसकी आबादी और समूह महत्वपूर्ण सामान्य पहचान योग्य सांस्कृतिक लक्षणों, जैसे भाषा, उपकरण और भौतिक संस्कृति, रिश्तेदारी, सामाजिक संगठन और सांस्कृतिक इतिहास को साझा करते हैं। इसलिए, भौगोलिक क्षेत्र में समान लक्षण साझा करने वाले समूहों को एकल संस्कृति क्षेत्र में वर्गीकृत किया जाएगा। संस्कृति क्षेत्र ने भौगोलिक स्थानों पर विभिन्न संस्कृतियों के बीच ऐतिहासिक संबंधों पर प्रकाश डाला और उसी या एक प्रमुख संस्कृति द्वारा शासित क्षेत्रों को मान्यता दी। इस सांस्कृतिक संबंध को ऐतिहासिक संबंधों को समझने के लिए समय के आयाम को ध्यान में रखते हुए सांस्कृतिक चरणों के सन्दर्भ में समझा गया था। रसेल गॉर्डन स्मिथ (1929) ने अपने पेपर 'द कॉन्सेप्ट ऑफ द कल्चर–एरिया' में बताया है कि, ''संस्कृति–क्षेत्र सांस्कृतिक आंकड़ा संस्कृतियों का एक अनुभवजन्य समूह है, जिसमें जांच की इकाई और वर्गीकरण का सिद्धांत तथ्यों और उनके अस्थायी और स्थानिक वितरण के प्रत्यक्ष अवलोकन से लिया गया है'' (स्मिथ, 1929: 421)।

जॉर्ज डब्ल्यू हिल (1941) ने अपने पेपर 'द यूज ऑफ कल्चर एरिया कॉन्सेप्ट इन सोशल रिसर्च' में बताया है कि ''वर्गीकरण की एक तकनीक वैज्ञानिक अनुसंधान की आधारशिला है। इस तरह की प्रणाली के विकास से पहले, एक विषय अनुमानित रहता है और इसमें बहुत कम वस्तुनिष्ठता होती है। विकासवादी प्रणाली का अनुसरण करने के बाद, संस्कृति क्षेत्र मानवविज्ञान में बहुत आवश्यक वर्गीकरण प्रदान करता है'' (हिल, 1941:39)। यह कथन इस तथ्य को प्रकाश में लाता है कि मानवविज्ञान अभी भी 'प्रत्यक्षवादी' युग में एक वैज्ञानिक विषय के रूप में अपने आप को स्थापित कर

रहा था, और इसमें संस्कृति क्षेत्र की अवधारणा ने इसे अपनी विश्वसनीयता साबित करने के लिए बहुत आवश्यक रूपरेखा प्रदान की, जबकि इसने मानव जाति के एकरेखीय क्रमिक विकास के सिद्धांत से स्वयं को अलग कर लिया।

आइए, अगले उपभाग में, यह समझें कि पारंपरिक विकासवादी स्कूल के विचार की आलोचना मानवशास्त्रीय विचार में परिवर्तन को संस्कृति क्षेत्र की अवधारणा की ओर कैसे ले जाती है।

3.1 विचार का ऐतिहासिक प्रक्षेप पथ

संस्कृति क्षेत्र की अवधारणा एकरेखीय क्रमिक विकास के वैकल्पिक स्पष्टीकरण के रूप में विकसित हुई। इसने सांस्कृतिक आंकड़ों को समझने के लिए एक सैद्धांतिक रूपरेखा विकसित करने में प्राकृतिक विज्ञान और संग्रहालय विज्ञान जैसे अन्य विषयों से भी बहुत कुछ सीखा। यह अनुभाग एक पृष्ठभूमि प्रदान करता है कि कैसे क्रमिक विकासवाद और एक बहु–विषयक प्रभाव की आलोचना ने अवधारणा के विकास में मदद की।

3.1.1 एकरेखीय क्रमिक विकास की आलोचना

पारंपरिक विकासवादी सिद्धांत 1800 के दशक के अंत में अस्तित्व में आया और पश्चिमी सभ्यता को विकास के शिखर पर रखने वाले जातीय सिद्धांत के रूप में इसकी आलोचना की गई। विकासवादियों ने प्रस्तावित किया कि मनुष्य विशेषताओं और सोचने के तरीकों का एक समूह साझा करते हैं जो व्यक्तिगत संस्कृतियों (मानव जाति की मानसिक एकता) से परे हैं और भौगोलिक रूप से अलग क्षेत्रों के बीच सांस्कृतिक लक्षणों की समानता को समान विकासवादी पद्धति के लिए जिम्मेदार ठहराया है। जैसे जैसे अधिक मानवशास्त्रीय जानकारी एकत्रित होने लगी, इससे दो वैकल्पिक संभावनाओं की कल्पना हुई :

क) स्वतंत्र स्थानीय नवाचार (एक के बाद एक स्थानीय आविष्कार) और

ख) प्रसार (नवाचार कुछ इलाकों में बनाया जाता है जहां से वे एक विस्तृत क्षेत्र में फैलते हैं)

विकासवादी सिद्धांत एक भव्य या नियमान्वेषी सिद्धांत था। इसके विपरीत हमारे पास अमेरिका में ऐतिहासिक विशिष्टता का विकास है जो अद्वितीय संस्कृतियों के ऐतिहासिक प्रक्षेप पथ पर केंद्रित है। सांस्कृतिक जांच के लिए इस प्रकार के ऐतिहासिक दृष्टिकोण को पूरा करने के लिए तैयार किया गया पहला दृष्टिकोण प्रसारवाद था। जैसा कि शब्द से पता चलता है कि प्रसारवाद ने अपने मूल स्थान से अन्य स्थानों पर संस्कृति के लक्षणों के फैलाव का अध्ययन किया। ऐतिहासिकता और प्रसारवाद दोनों ने संस्कृति क्षेत्र की अवधारणा में योगदान दिया, हालांकि इन विचारों को विस्तार से पढ़ने और संस्कृति क्षेत्र की अवधारणा में उनके योगदान को समझने से पहले आइए देखें कि प्राकृतिक विज्ञान ने संस्कृति क्षेत्र की अवधारणा के विचार में कैसे योगदान दिया।

3.1.2 जैविक विज्ञान और संग्रहालय विज्ञान का प्रभाव

संस्कृति क्षेत्र की अवधारणा का प्रभाव प्रारूप विज्ञान और वर्गीकरण विज्ञान के संदर्भ में जैविक आंकड़ों की व्यवस्थित प्रस्तुति और वर्गीकरण विज्ञान से मिलता है, जिसका पता स्वीडिश वनस्पति शास्त्री कैरोलस लिनिअस, फ्रांसीसी जीवविज्ञानी जीन–बैप्टिस्ट लैमार्क और अन्य लोगों से लगाया जा सकता है, जिन्होंने जीवों की आकृति विज्ञान या भौतिक संरचनाओं (जैसे फूल, आवरण और हड्डियों) का उपयोग जीवित प्राणियों के समूहों के बीच संबंध को स्पष्ट करने के लिए किया था।

इस विचार को डेनमार्क के पुरातत्वविद्, क्रिश्चियन जुर्गेंसन थॉमसन, डेनमार्क के राष्ट्रीय संग्रहालय के निरीक्षक (1816–65) द्वारा संग्रहालय विज्ञान में आगे बढ़ाया गया था, जिन्होंने उत्तरी यूरोप में पाए जाने वाले प्राचीन लॉकेट (पेंडेंट) के अपने अध्ययन में, विभिन्न प्रकार की रूपात्मक श्रेणियों, जैसे प्रतीक चिन्ह और आकार की सारणी तैयार की थी। इस प्रकार इसे मिलाकर प्रारूप विज्ञान बनाया गया, और उन्होंने दिखाया कि ये नॉर्डिक आभूषण पहले के रोमन सिक्कों से विकसित हुए थे। इसने भौगोलिक स्थान के माध्यम से एक सांस्कृतिक वस्तु के प्रसार को दर्शाया, जिसके परिणामस्वरूप वस्तु की यात्रा के माध्यम से इसमें लगातार परिवर्तन हुआ।

वडस्टेना ब्रैक्टियेट

चित्र 1: कुंगल के सौजन्य से। हिस्ट्री ऑफ विटनेस एंड द एकेडमी ऑफ एंटिक्स, स्टॉकहोम। स्रोतः वडस्टेना ब्रैक्टियेट – विकिपीडिया

इसने प्रसार के विचार का समर्थन किया (एक सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य जिसने संस्कृति क्षेत्र के विचार को प्रभावित किया)। नवाचार–प्रसार बहस के राजनीतिक निहितार्थ गहरे थे। इसका परिणाम पद्धतिगत समस्या के रूप में हुआ कि कोई कैसे वैज्ञानिक रूप से किसी भी प्रक्रिया की प्रधानता निर्धारित कर सकता है। स्मिथसोनियन इंस्टीट्यूशन (1884–1908) में नृवंशविज्ञान के निरीक्षक, ओटिस टी मेसन ने युनाइटेड स्टेट्स नेशनल म्यूजियम, मेसन (1886) के लिए संग्रहालय प्रदर्शनों के आयोजन के लिए अपने कार्यक्रम की एक रिपोर्ट में एक ऐसी विधि का सुझाव दिया। वह 'संस्कृति क्षेत्र' शब्द का इस्तेमाल करने वाले पहले लोगों में से थे, हालांकि उनका ध्यान सांस्कृतिक सामग्री की प्रस्तुति पर था। उनका मानना था कि यदि एक जीवविज्ञानी पक्षियों के पंखों के रूप में विविधताओं का अध्ययन कर सकता है, तो अंततः पंख के सबसे बुनियादी आधार से अपने सबसे उन्नत रूप में एक अनुक्रम बना सकता है। नृवंशविज्ञानी यह देखने के लिए समान तरीके लागू कर सकते हैं कि क्या कोई

सांस्कृतिक लक्षण (जैसे टोकरी बनाना) स्वतंत्र रूप से विकसित हुई है या फैल गई है। मेसन के अनुसार, इस तरह के अध्ययनों की एक श्रृंखला, कई लक्षणों का विश्लेषण करने के परिणामस्वरूप, अंततः नवाचार या प्रसार का समर्थन करने वाले साक्ष्य का एक प्रमुख परिणाम होगा, इस प्रकार सांस्कृतिक विकास में कार्य–कारण के प्रश्न का समाधान होगा।

हालांकि फ्रांज बोआस ने मेसन की आलोचना की और कहा कि, संस्कृतियों को उनके लक्षणों के अनुसार उच्च या निम्न के रूप में श्रेणिकरण में, मेसन द्वारा अपनाई गई तुलनात्मक पद्धति आंतरिक रूप से पक्षपाती थी और यह इसलिए, वैज्ञानिक नहीं थी। बोआस लिखते हैं कि ''जैविक और सांस्कृतिक आंकड़ों के बीच में एक मूलभूत अंतर है,जो एक विज्ञान के तरीकों को दूसरे में स्थानांतरित करना असंभव बनाता है। जानवरों के रूप अलग–अलग दिशाओं में विकसित होते हैं, और प्रजातियों का आपस में मिलना जो एक बार अलग हो गए हैं, पूरे विकास के इतिहास में नगण्य है।'' 33. (बोआस, 1932: 609)।

बोआस के सहायक, क्लार्क विस्लर, बोआस के बाद अमेरिकन म्यूजियम ऑफ नेचुरल हिस्ट्री के निरीक्षक बने। संस्कृति क्षेत्र की अवधारणा को क्लार्क विस्लर द्वारा ईमानदारी से विकसित किया गया था, और एक सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य दिया गया था जो मानवविज्ञान के लिए आवश्यक संकर(क्रास)–सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य को संरक्षित करते हुए वैज्ञानिक कानूनों को बना सकता था।

इससे पहले कि हम क्लार्क विस्लर द्वारा प्रस्तावित संस्कृति क्षेत्र अवधारणा में आगे बढ़ें, आइए पहले हम उन विद्वानों की चर्चाओं को देखें जिन्होंने संस्कृति क्षेत्र की अवधारणा में योगदान दिया। जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, संस्कृति क्षेत्र की अवधारणा नवाचार–प्रसार बहस के फलस्वरूप एक पद्धतिगत प्रतिक्रिया के रूप में अस्तित्व में आई, इस प्रकार प्रसार के आसपास के विचारों और संस्कृति क्षेत्र की अवधारणा में इसके प्रभाव को समझना महत्वपूर्ण है।

अपनी प्रगति जाँचें 1

1) मानवशास्त्रीय विचार वरीयता पारंपरिक सामाजिक–सांस्कृतिक विकास से ऐतिहासिकता और प्रसारवाद में क्यों बदल गई?

.....

.....

.....

.....

.....

2) जैविक विज्ञान और संग्रहालय विज्ञान ने संस्कृति क्षेत्र की अवधारणा में कैसे योगदान दिया?

.....

.....

.....

.....

3.2 सैद्धांतिक संदर्भ

हमारे लिए यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि नवाचार और प्रसार के विचार पारंपरिक विकासवादी सिद्धांत की आलोचना के रूप में विकसित हुए। हालाँकि, यह स्वयं विकासवादी सिद्धांत की निरंतरता में था, जहाँ सामाजिक विकास ने अधिक क्षेत्रीय परिप्रेक्ष्य लिया और सांस्कृतिक संपर्क और प्रसार के विचारों को अकादमिक मान्यता प्रदान की गई। मानवशास्त्रीय इतिहास (1800 के दशक के अंत और 1900 के दशक की शुरुआत) के इस अनुमान पर व्यापक मानवशास्त्रीय आंकड़ा एकत्र किया जा रहा था। इस आंकड़े ने एक क्षेत्र में विभिन्न जनजातियों के बीच लक्षणों की समानता को दिखाया। इसके अलावा, जैसा कि मानवविज्ञानी ने अदृश्य/लुप्त होती जनजातियों का अध्ययन करने की आवश्यकता को स्वीकार किया था और यह महसूस किया गया था कि उपनिवेशीकरण प्रक्रिया या सांस्कृतिक संपर्कों के कारण यह विलुप्त होते जा रहे हैं। सांस्कृतिक लक्षणों की क्षेत्रीय समानता और संस्कृति संपर्क की वास्तविकता ने सामाजिक विकास और संस्कृतियों के विकास को समझने के स्थान के भीतर नवाचार और प्रसार के विचार को सामने लाया। मानवशास्त्रीय विचार में इस बदलाव का अध्ययन आमतौर पर प्रसारवाद के दायरे में किया जाता है। जैसा कि आप इकाई 2 में पहले ही पढ़ चुके हैं कि, प्रसारवाद के विचार को तीन अलग–अलग स्कूलों, ब्रिटिश स्कूल, जर्मन स्कूल और अमेरिकी स्कूल द्वारा प्रतिनिधित्व किया गया था। यहाँ इस अनुभाग में, हम आपको इसका सारांश बता रहे हैं।

3.2.1 ब्रिटिश स्कूल का विचार

प्रसारवाद के ब्रिटिश स्कूल का नेतृत्व जी.ई. स्मिथ और डब्ल्यू.जे. पेरी ने किया था। इन विद्वानों को मिस्र विज्ञानी (इजिप्टोलॉजिस्ट) के रूप में जाना जाता था। उनके अनुसार सभी संस्कृति और सभ्यता प्राचीन मिस्र में केवल एक बार विकसित हुई और शेष विश्व में प्रवास और उपनिवेशीकरण के द्वारा फैल गई। इसलिए, सभी संस्कृतियों को एक सामान्य मूल (या मानव जाति की मानसिक एकता) द्वारा एक साथ बांधा गया था और इसके परिणामस्वरूप, दुनिया भर में सांस्कृतिक विकास को मिस्र से संस्कृति के इस प्रसार के लिए देशी संस्कृतियों की प्रतिक्रिया के रूप में देखा जा सकता है।

जी. इलियट स्मिथ मिस्र की सभ्यता के बहुत बड़े प्रशंसक थे। उनके अनुसार ऐसे कई अंग्रेजी स्मारक थे जो पिरामिड की संरचना की द्वितीयक प्रति थे। स्मिथ ने वास्तुकला का अध्ययन करने के लिए मिस्र, जापान, कंबोडिया, मलेशिया, इंडोनेशिया की यात्रा की, जहां उन्होंने मिस्र के पिरामिडों और जापानी शिवालयों, कंबोडियाई मंदिरों, इंडोनेशिया के मंदिरों में समानता पाई। अपने सभी अध्ययनों से उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि लगभग 400 ईसा पूर्व मिस्र के स्मारकों की संस्कृति के लक्षण मिस्र से दुनिया के अन्य हिस्सों में फैलने लगे। अपनी पुस्तक ''द ओरिजिन ऑफ सिविलाइजेशन'' (1928) में, उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि मिस्र संस्कृति का एकमात्र केंद्र था, और बाद में नील नदी के उपजाऊ तट पर कृषि और पहली सभ्यता का उदय हुआ । मिस्र ने पानी को नियंत्रित करने के लिए जलचालित (हाइड्रोलिक) प्रणाली जैसे वैज्ञानिक तरीके विकसित किए, मिट्टी के बर्तनों, बुनाई, पहिया और लिखने के लिए लिपि का आविष्कार किया और शहरों में रहने लगे। सरकार बनी, कानून बने और धर्म समृद्ध हुआ। मिस्रवासीयों ने नौचालन की प्रणाली विकसित की और कीमती पत्थर और धातु की तलाश में दुनिया के विभिन्न कोनों में दूर–दूर तक

यात्रा की। इस यात्रा के दौरान उन्होंने अपनी सभ्यता के लाभ को दुनिया के दूसरे हिस्सों में फैलाया। इस प्रकार, स्मिथ के अनुसार पुरुष दो प्रकार के थे, मिस्र के सभ्य पुरुष और मिस्र के बाहर प्राकृतिक पुरुष। स्मिथ का मानना था कि सभ्य लक्षणों के संपर्क में आने पर प्राकृतिक पुरुषों में क्रांति आती है। स्मिथ का अंतर्निहित विचार ''मानव जाति की अकल्पनाशीलता'' है यानी, मानव प्राकृतिक रूप से अकल्पनाशील है, और आविष्कार, खोज मिस्र में शुरू हुए।

डब्ल्यू. जे. पेरी (1877–1949): डब्लयू. जे. पेरी स्मिथ के प्रबल समर्थक थे, और इस बात से सहमत थे कि सांस्कृतिक समानताएं प्रसार के कारण हैं न कि आविष्कार के कारण, और यह कि मिस्र सभ्यता का गढ़ था।

मिस्र के वैज्ञानिकों की उनकी संकीर्ण दृष्टि और इस तथ्य के लिए आलोचना की गई थी कि उन्होंने सोचा था कि मनुष्य आविष्कारशील नहीं था, और यद्यपि वे प्रसार के विचार में कुछ रुचि रखते थे, लेकिन जिसके आधार पर उन्होंने अपना सिद्धांत तैयार किया था उसमें कुछ कमियां थीं।

3.2.2 जर्मन स्कूल

जर्मन स्कूल ऑफ डिफ्यूजनिज्म ने संस्कृति मंडल या कुल्टरक्रेइस अवधारणा का प्रस्ताव रखा, जो कि संस्कृति विशेषता परिसरों के व्यापक मंडलों को उनके मूल स्थान से बाहर की ओर फैलाती है। एफ. रत्जेल (1884–1904) ने अपनी पुस्तक ''एंथ्रोपो–ज्योग्राफी'' (1892) में संस्कृति मंडलियों के विचार को आगे बढ़ाया। उन्होंने तर्क दिया कि क्षेत्र और संस्कृति के बीच एक मजबूत संबंध है। उन्होंने कहा कि पर्यावरण और जलवायु ने संस्कृति मंडल के निर्धारण में प्रमुख भूमिका निभाई है। पहाड़ों पर, नदियों के पास और रेगिस्तान में रहने वाले लोगों की संस्कृति अलग–अलग होती है। व्यक्ति इन संस्कृतियों के दायरे में लगातार नवाचार करते हैं और नवाचार पड़ोसी क्षेत्रों में प्रवास करते हैं या फैलते हैं। ''एंथ्रोपो–ज्योग्राफी'' ने बताया कि प्रवास और प्रसार के कारण विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में संस्कृति मंडल आ सकते हैं । रत्जेल के एक छात्र फ्रोबेनियस ने सांस्कृतिक लक्षणों के वितरण को मापने के लिए आँकड़ों का उपयोग करने की कोशिश की, जिससे भौगोलिक आँकड़ों के विचार का सुझाव दिया गया।

संस्कृति मंडलों की जर्मन अवधारणा की कई कारणों से आलोचना की गई थी। मानवविज्ञानियों ने महसूस किया कि सांस्कृतिक घटनाएँ बहुत जटिल हैं जिन्हें बहुत कम संख्या में कुल्टरक्रेइस की परस्पर क्रिया द्वारा समझाया जा सकता है। इसने असंभावित दूरियों पर संपर्कों की बात की और स्वतंत्र आविष्कार के लिए छूट नहीं दिया। इस सिद्धांत के समर्थकों ने समरूप विशेषताओं (जो समान दिखाई देते हैं लेकिन उत्पत्ति अलग–अलग है) को समरूप लोगों के लिए गलत समझा (वे जो समान दिखाई देते हैं क्योंकि वे एक उत्पत्ति साझा करते हैं) और ऐसी घटनाओं की इस प्रकार तुलना की, जो वास्तव में तुलनीय नहीं थीं।

3.2.3 अमेरिकी स्कूल और संस्कृति क्षेत्र सिद्धांत

अमेरिकी स्कूल के विचार ने संस्कृति क्षेत्र की अवधारणा के विकास को दो प्रमुख विचारकों क्लार्क विस्लर और ए. एल. क्रोबर के नेतृत्व में विकसित हुआ, जिन्हें फ्रांज बोआस का सानिध्य प्राप्त था।

संयुक्त राज्य अमेरिका में, फ्रांज बोआस पहले विचारक थे जिन्होंने संस्कृति क्षेत्रों की समझ को औपचारिक रूप से प्रतिपादित किया (बकले, 1989)। उन्होंने कहा कि ये क्षेत्र ऐतिहासिक और साथ ही भौगोलिक इकाइयाँ, समय के साथ सांस्कृतिक विकास की प्रक्रियाओं के स्थानिक गुणांक थे। उन्होंने सांस्कृतिक क्षेत्रों के भौतिक वातावरण, उनमें रहने वाले लोगों के ''मनोविज्ञान'' और समय के साथ संस्कृति क्षेत्रों के भीतर सांस्कृतिक वृद्धि या विकास को नियंत्रित करने वाले तीन स्वतंत्र चर के रूप में प्रौद्योगिकियों और अन्य चरों की पहचान की (बोआस, 1896)। उन्होंने भौगोलिक दृष्टि से निकटवर्ती क्षेत्रों में संस्कृति के आदान–प्रदान के लिए एक व्यवहार्य तंत्र के रूप में प्रसार पर विचार किया। बोआस ने तर्क दिया कि, संस्कृति लक्षणों के वितरण की खोज करने और कार्य पर संस्कृति परिवर्तन की व्यक्तिगत प्रक्रियाओं को समझने के लिए व्यक्ति को व्यक्तिगत संस्कृतियों का विस्तृत क्षेत्रीय अध्ययन करना होगा। उन्होंने (अलग–अलग) मानव समाजों के सभी पहलुओं पर नृवंशविज्ञान आंकड़ों के सावधानीपूर्वक संग्रह और संगठन की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि कई अलग–अलग संस्कृतियों के विवरणों पर जानकारी एकत्र होने के बाद ही सांस्कृतिक विकास के बारे में सामान्यीकरण सटीकता की कोई भी उम्मीद की जा सकती है। इस प्रकार, जबकि बोआस ने संस्कृति क्षेत्र की प्रासंगिकता को पहचाना, उन्होंने यह भी महसूस किया कि मानवविज्ञानी के लिए विशिष्ट संस्कृतियों का गहराई से अध्ययन करने के लिए समय की आवश्यकता थी। इसके लिए, उन्होंने विशिष्ट संस्कृतियों के इतिहास का पुनर्निर्माण करने की मांग की और इतिहास और संस्कृति दोनों के संदर्भ में एक समाज की विशिष्टता पर ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने तर्क दिया कि कई संस्कृतियां स्वतंत्र रूप से, अपने स्वयं के अनूठे परिस्थितियों जैसे भूगोल, जलवायु, संसाधनों और विशेष सांस्कृतिक अधिग्रहण के आधार पर विकसित हुईं। इस तर्क के आधार पर, व्यक्तिगत संस्कृतियों के इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए एक गहन जांच की आवश्यकता होती है जो विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्रों में संस्कृति लक्षणों के समूहों की तुलना करती है। फिर इन संस्कृति लक्षणों के वितरण को आलेखित करना चाहिए। एक बार जब एक सामान्य भौगोलिक क्षेत्र के लिए संस्कृति लक्षणों के कई समूहों का वितरण किया जाता है, तो सांस्कृतिक अधिग्रहण की पद्धति निर्धारित की जा सकती है। यह जांच करने कि कौन से सांस्कृतिक तत्व अधिग्रहीत किए गए थे और किन्हें व्यक्तिगत रूप से विकसित किया गया था, के बाद यह विशिष्ट संस्कृतियों के व्यक्तिगत इतिहास के पुनर्निर्माण की अनुमति देता है (बॉक 1996 : 299)।

हालांकि संस्कृति क्षेत्र की अवधारणा को क्लार्क विस्लर (1870–1947) ने आगे बढ़ाया। उन्होंने संस्कृति का एक ऐसा दृष्टिकोण विकसित किया जो व्यापक भौगोलिक क्षेत्रों में इसकी निरंतरता पर केंद्रित था। चूंकि संकर–सांस्कृतिक नाममात्र अध्ययनों के लिए आवश्यक है कि तुलना की जाने वाली वस्तुओं को यथासंभव सख्ती से परिभाषित किया जाए, विसलर, टेलर के बाद पहले मानवविज्ञानी और संस्कृति की परिभाषा की पेशकश करने वाले पहले अमेरिकी मानवविज्ञानी बने। उन्होंने अपनी पुस्तकों ''द अमेरिकन इंडियन'' (1917), ''मैन एंड कल्चर'' (1923) और ''द रिलेशन ऑफ नेचर टू मैन (1926) में संस्कृति क्षेत्र और आयु–क्षेत्र की अवधारणा विकसित की।

विस्लर के नेतृत्व में संस्कृति क्षेत्र संस्कृति परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत बन गया। इसने विशिष्ट सामाजिक इकाई (जैसा कि बोआस द्वारा निर्धारित किया गया है) की संस्कृति और इतिहास से विश्लेषणात्मक मुख्य केंद्र में एक परिवर्तन को

संकर–सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में देखे जाने वाले लक्षण– पुंज के साथ एक अध्ययन का विषय बनाया (फ्रीड एस ए और आर एस फ्रीड, 1883)। बोआस के विपरीत, विस्लर विश्व इतिहास को समझना चाह रहे थे। उन्होंने पश्चिमी गोलार्ध के इतिहास की तस्वीर को समझने के लिए कृषि, कपड़ा कला, वास्तुकला, आदि का अनुसरण किया।

संस्कृति क्षेत्र मुख्य रूप से भौतिक लक्षणों और आर्थिक आधार से निर्धारित होता था, लेकिन उन्हें अलग करने के लिए औपचारिक और सामाजिक लक्षण–पुंज का भी उपयोग किया जाता था। प्रत्येक संस्कृति क्षेत्र को एक संस्कृति केंद्र माना जाता था ''जिससे संस्कृति प्रभाव विकीर्ण होते प्रतीत होते हैं'' (विस्लर, 1917: 242)। इस प्रकार, प्रसार को एक संस्कृति क्षेत्र के निर्माण में मूल प्रक्रिया के रूप में देखा गया। विस्लर ने विकास के केंद्र बिंदुओं के महत्व को समझा, जिसके परिणामस्वरूप उसे स्थानिक (संस्कृति केंद्र) और संभवतः अस्थायी (सांस्कृतिक चरमोत्कर्ष) शब्दों में परिभाषित किया गया। केंद्र बिंदु से बाहर की ओर निकलने वाले लक्षण और जो लक्षण आगे तक पहुंच गए, उन्हें सबसे पुराना समझा गया। संस्कृति क्षेत्रों में इस प्रकार निम्न दोनों शामिल थे–

क) विशिष्ट जनजातियों का एक समूह जो परिभाषित करने वाले अधिकांश लक्षण–पुंजों को साझा करते हैं, और

ख) सीमांत जनजातियां जिनमें विशिष्ट लक्षण कम हैं (फ्रीड एस.ए. और आर.एस. फ्रीड, 1883)।

विसलर ने संस्कृति क्षेत्रों का पर्यावरण से संबंध समझाने का प्रयास किया। उन्होंने कहा कि पर्यावरण किसी संस्कृति का निर्माण नहीं करता, बल्कि उसे स्थिर करता है। जैसा कि (कई बिंदुओं पर) संस्कृति को पर्यावरण के अनुकूल होना चाहिए, और बाद में इसे तेजी से धारण करता है। एक बार जब वे अपने आप को एक व्यवस्था के अनुकूल कर लेता है, तो संस्कृतियों में धीरे–धीरे बदलाव होता है, और पूरे प्राकृतिक क्षेत्र में जहां से उसकी उत्पत्ति हुई है, से फैलने की तुलना में अधिक कठिनाई के साथ एक नए वातावरण में प्रवेश करने की तैयारी करता है। यदि वे एक नए प्रकार के क्षेत्र में प्रवेश करते हैं, तो उसमें परिवर्तन होता है। एक बार पर्यावरण के अनुकूल होने के बाद, वे केवल कुछ ऐसे कारकों के माध्यम से मौलिक रूप से बदलने की संभावना रखते हैं जो निर्वाह को गहराई से प्रभावित करते हैं। विस्लर ने उत्तरी अमेरिका को दस संस्कृति क्षेत्रों में विभाजित किया जहां (क्रोबर के अनुसार) निर्वाह क्षेत्र मुख्य रूप से संस्कृति और पर्यावरण के आधार पर संदर्भित होते हैं, और पारिस्थितिक पहलुओं ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ए एल क्रोबर ने संस्कृति क्षेत्र सिद्धांत के महत्व को पहचाना, इस पर इसे विकसित किया, साथ ही साथ उत्तरी अमेरिकी जनजातियों के बीच विभिन्न संस्कृति क्षेत्रों को परिभाषित करके सिद्धांत को व्यवहार में लाया।

अल्फ्रेड लुई क्रोबर (1876–1960) – क्रोबर ने 'संस्कृति क्षेत्र' को एक दुर्भाग्यपूर्ण पदनाम के रूप में संदर्भित किया, जिसमें यह क्षेत्र पर जोर देता है, जबकि यह आमतौर पर सांस्कृतिक विषय वस्तु है जिसे मुख्य रूप से माना जा रहा है। बोआसियन स्कूल के विचारधारा से प्रभावित होने के कारण, क्रोबर सांस्कृतिक सापेक्षवाद में विश्वास करते थे। उन्होंने कहा कि संस्कृतियाँ प्रकृति में समग्र रूप से होती हैं, और इन पूर्णों को कभी भी उनके तत्वों पर विचार करके पूरी तरह से तैयार नहीं किया जा सकता है, इसमें उन्होंने क्लार्क विस्लर की आलोचना की। उन्होंने

नवाहो और प्युब्लोस (या नॉर्थ पेसिफिक कोस्ट इंडियंस) जनजातियों के उदाहरण के साथ इसे उचित ठहराया। उन्होंने बताया कि नवाहो वेदी पेंटिंग दक्षिण पश्चिम में सबसे अधिक विकसित हो सकती हैं, लेकिन नवाहो संस्कृति अभी भी प्युब्लोस के करीब है और कई मायनों में जाहिर तौर पर इस पर निर्भर है। इसलिए, उन्होंने दिखाया कि कभी–कभी एक संस्कृति में एक ही विशेषता बहुत अलग हो सकती है और इस प्रकार यदि सांस्कृतिक लक्षणों का पालन किया जा रहा है तो यह भ्रामक हो सकता है, जबकि समग्र तुलना संस्कृतियों के बीच एक मजबूत संबंध प्रदान कर सकती है। इस प्रकार उनका मानना था कि संस्कृति– क्षेत्र की अवधारणा में इस तरह के सांस्कृतिक कमी को पूरा करने का प्रयास करना चाहिए।

क्रोबर ने संस्कृति–ऐतिहासिक कानूनों की खोज के अंतिम उद्देश्य के लिए, भौगोलिक –जातीय संस्कृति के इतिहास में कमी को देखा। क्रोबर ने दुनिया भर में नृवंशविज्ञान और पुरातात्विक आंकड़ों के बढ़ते हुए भाग के लिए संस्कृति क्षेत्र के दृष्टिकोण का उपयोग किया। क्रोबर की रचनाओं में से एक 1925 में प्रकाशित ''इंडियंस ऑफ कैलिफोर्निया'' की विवरण पुस्तिका सबसे बड़ी रचना थी। यह संस्कृति क्षेत्रों और उपक्षेत्रों और उनके ऐतिहासिक निहितार्थों को सामने लाती है। सांस्कृतिक क्षेत्रों और सांस्कृतिक निरंतरताओं में क्रोबर की बढ़ी हुई रुचियों ने उनके अन्य प्रमुख कार्यों, ''कल्चरल एंड नेचुरल एरियाज इन नेटिव नॉर्थ अमेरिका'' (1939) को जन्म दिया। सांस्कृतिक और प्राकृतिक क्षेत्रों ने न केवल सांस्कृतिक क्षेत्रों को चित्रित किया, बल्कि उन्हें प्राकृतिक क्षेत्रों से भी जोड़ा और, अधिक महत्वपूर्ण, सांस्कृतिक चरमोत्कर्ष की अवधारणा को पेश किया। पहले तत्व वितरण अध्ययनों ने क्षेत्रों के भीतर संस्कृति केंद्रों की अवधारणा को नियोजित किया था, जो अधिक जटिल थी और इसलिए अधिक आविष्कारशील मानी जाती थी, और इसमें ज्यादा गुंजाइश थी, जो सांस्कृतिक उपलब्धियों के सरल, अकल्पनीय परिधीय प्राप्तकर्ता थे। क्रोबर की सांस्कृतिक चरमोत्कर्ष की अवधारणा ने इस निहितार्थ से परहेज किया कि सबसे बड़ी जटिलता का अर्थ आविष्कारशीलता का पथ था, और सांस्कृतिक गहनता या संचय के बजाय इस पर ध्यान आकर्षित किया। उन्होंने इसे 'घर' या 'चरमोत्कर्ष क्षेत्र' बताया। उन्होंने लिखा है कि ''जब एक सांस्कृतिक आधार का हिस्सा एक स्तर में प्रतिदीप्त होता है, तो आसपास के समूहों की तुलना में अधिक उपलब्धि, मुख्य रूप से अपनी पहल के बल पर, इसे चरमोत्कर्ष क्षेत्र कहा जा सकता है। ये क्षेत्र लगभग अनिवार्य रूप से फैलाव के महत्वपूर्ण केंद्रों के रूप में कार्य करते हैं ''(क्रोबर, 1939:222–9)। उन्होंने इस संदर्भ को समाजशास्त्रीय दृष्टि से विकसित किया, जिसमें मिस्र की सभ्यता सहित महान सभ्यताओं के स्वर्ण और अंधकार युग को देखते हुए इन अवधियों को सभ्यता के विकास के शिखर और गर्त के रूप में संदर्भित किया गया।

संस्कृति क्षेत्र की कल्पना करने की अपनी विशिष्ट मानवशास्त्रीय खोज में उन्होंने कैलिफोर्निया और उत्तरी अमेरिका के उनके संस्कृति क्षेत्र के आधार पर क्षेत्रीय मानचित्र तैयार किए। क्रोबर ने समझाया कि संस्कृति के किसी भी मानचित्रण की सबसे कमजोर विशेषता उसकी सबसे विशिष्ट सीमाएं हैं। जहां दो संस्कृति चरमोत्कर्ष या केंद्रबिंदु के प्रभाव समान ताकत में मिलते हैं, यदि सीमाओं को इंगित करना है, वहां एक रेखा खींची जानी चाहिए। फिर भी वहाँ अंतर है, जो अक्सर मामूली होते हैं। यदि दो व्यक्ति दो अलग–अलग क्षेत्रों में रहते हैं, फिर भी अंतर–क्षेत्रीय सीमा के साथ एक–दूसरे से सटे हुए हैं तो उनमें अनिवार्य रूप से बहुत कुछ समान है। यह संभव है कि उनमें सामान्य रूप से उनके संबंधित क्षेत्रों के केंद्रबिंदु के लोगों की तुलना में

एक–दूसरे के साथ समान रूप से अधिक लक्षण होंगे। ऐसा होना लगभग तय है जहां केंद्रबिंदु से दूरी बहुत अधिक है और सीमा किसी भी मजबूत भौतिक बाधा या अचानक प्राकृतिक परिवर्तन से प्रभावित नहीं होती है। क्रोबर ने संस्कृति क्षेत्र का एक हवाई वितरण प्रदान किया, और उत्तरी अमेरिका को 84 क्षेत्रों और उप क्षेत्रों में विभाजित किया और इन सभी क्षेत्रों को 7 बड़े क्षेत्रों के अंतर्गत शामिल किया। ये 7 बड़े क्षेत्र रेगिस्तान, आर्कटिक, बड़े मैदान, पर्वत, नदी घाटियां, तटीय मैदान और ऊबड़–खाबड़ स्थलाकृति के इलाके हैं जो शेष 6 अन्य क्षेत्रों का हिस्सा नहीं हैं।

मानवविज्ञान के प्रक्षेप पथ में संस्कृति क्षेत्र की अवधारणा का बहुत महत्व था। जूलियन स्टीवर्ड, बोआस के एक अन्य छात्र ने दक्षिण अमेरिका में छह संस्कृति क्षेत्रों का विकास किया, वह प्रचलित पर्यावरणीय परिस्थितियों से जुड़े थे। स्टीवर्ड ने इन सांस्कृतिक क्षेत्रों के भीतर संस्कृति के विकास और प्रसार के विभिन्न पद्धति का पता लगाया, जो अंततः मानवविज्ञान में 'स्कूल ऑफ कल्चर इकोलॉजी' की ओर अग्रसर हुआ।

संस्कृति क्षेत्र की अवधारणा उस समय की अवधि में स्थित हो सकती है जब पश्चिमी मानवविज्ञानी उन भौगोलिक क्षेत्रों के संपर्क में आ रहे थे जिनमें देशी/आदिवासी/स्वदेशी समुदाय शामिल थे, जिनका उपनिवेशी दुनिया के साथ अपेक्षाकृत कम संपर्क था। इन समुदायों के बीच सामाजिक संबंध था और मानवविज्ञानी ने पाया कि वे अक्सर सांस्कृतिक प्रथाओं में समानताएं साझा करते थे, खासकर निकटवर्ती जनजातियों के बीच। यह माना जाता था कि सांस्कृतिक प्रथाओं की यह समानता या निरंतरता समय की अवधि में पड़ोसी जनजातियों के बीच प्रसार के कारण थी। हालांकि, इस प्रसार का कोई दस्तावेजी रिकॉर्ड नहीं था। मानवविज्ञानियों ने इस सांस्कृतिक इतिहास का निर्माण करने का प्रयास किया, जहां सांस्कृतिक प्रथाओं और साथ ही साथ भौगोलिक क्षेत्रों में सांस्कृतिक स्थानों का मानचित्रण करके जनजातीय समानता और निरंतरता की उत्पत्ति हुई। विभिन्न मानवविज्ञानी विभिन्न उद्देश्यों के लिए संस्कृति क्षेत्र की अवधारणा का उपयोग करते हैं। अवधारणा के मुख्य प्रस्तावक अमेरिकी विचारधारा से थे और उन्होंने विभिन्न दृष्टकोणों से अवधारणा को देखा। फ्रांज बोआस ने एक जनजाति का समग्र रूप से अध्ययन करने के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विशिष्ट केंद्र बनाने में अंतर्दृष्टि का प्रचार करने के लिए अवधारणा का उपयोग किया। हालांकि क्लार्क विस्लर और ए एल क्रोबर ने, समय के साथ व्यापक प्रतिनिधित्व के दृष्टकोण से संकर–सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में संस्कृति क्षेत्र को सिद्धांतित किया । क्लार्क विस्लर ने विश्व इतिहास (विशेष रूप से पश्चिमी गोलार्ध के) का पता लगाने के लिए संस्कृति क्षेत्र का इस्तेमाल किया, जबकि क्रोबर ने संस्कृतियों को अधिक समग्र रूप में देखते हुए व्यक्तिगत प्रकार या संस्कृति के विशिष्ट विकास को क्षेत्रीय रूप से उजागर करने की कोशिश की।

इस अवधारणा की समकालीन प्रासंगिकता को मानवविज्ञान में क्षेत्र विशेषज्ञता की धारणा की दृढ़ता में देखा जा सकता है जहां स्कूलों के साथ–साथ विद्वानों को चीन अध्ययन, या दक्षिण एशियाई अध्ययन या मध्य पूर्वी अध्ययन में विशेषज्ञों में विभाजित किया जाता है। कहीं न कहीं भूगोल के साथ संस्कृति का जुड़ाव बना रहता है और मानवविज्ञान के भीतर उप–विषयों को परिभाषित करता है।

अपनी प्रगति जाँचें 2

3) आप संस्कृति क्षेत्र की अवधारणा का वर्णन कैसे करेंगे?

.....

.....

.....

.....

.....

3.3 'संस्कृति क्षेत्र की अवधारणा' ने अपना महत्त्व क्यों खो दिया?

लोगों की संस्कृति को एक स्थिर और पर्यावरणीय रूप से नियतात्मक तरीके से चित्रित करने की प्रवृत्ति के कारण संस्कृति क्षेत्र के सिद्धांतों की आलोचना की गई। यह भी बताया गया कि, किस पर और कितने लक्षणों पर ध्यान केंद्रित किया जाए , की बात को लेकर सिद्धांतवादी चयनात्मक थे । क्रोबर के मामले में (और उनकी स्वयं के स्वीकारोक्ति के माध्यम से) सांस्कृतिक तुलना के मानदंड प्रकृति में वर्णनात्मक और व्यक्तिपरक पाए जाते हैं।

संस्कृति क्षेत्र की अवधारणा ने अपना महत्व खो दिया क्योंकि यह जरूरी नहीं कि अचानक संस्कृति संपर्क और प्रभाव जैसे औपनिवेशिक ताकत इसके लिए जिम्मेदार हो। तथाकथित लुप्त हो रही संस्कृतियां या तो नष्ट हो गईं या उनका संस्कृति संक्रमण हुआ और पश्चिमी दुनिया के संपर्क में आने के कारण उनमें बदलाव आया। संस्कृतियों में इतनी उत्तेजना और प्रभाव था कि उनको तथाकथित प्राचीन या मूल रूप में समझना मुश्किल है। इसका अर्थ यह नहीं है कि संस्कृतियां रातोंरात बदल गईं, या सांस्कृतिक जुड़ाव (पड़ोसी संस्कृतियों के साथ) और प्रथाओं में अचानक बदलाव आया, लेकिन उनके बीच विषमता प्रमुख और स्पष्ट हो गई। आगे, समय के साथ–साथ सांस्कृतिक क्षेत्र में मानी जाने वाली जनजातियों ने अपनी आवाज उठाई, और उनके प्रतिनिधित्व/गलत प्रतिनिधित्व के बारे में बात की। जैसा कि संस्कृति क्षेत्र ने अक्सर जनजाति की भू–राजनीतिक पहचान भी बनाई। आज के समय में संस्कृति को अभी भी भौगोलिक संदर्भ मिलते हैं (जैसा कि पंजाबी संस्कृति के संदर्भ में परिचय में दिया गया था)। हालांकि, यह महसूस किया गया कि सांस्कृतिक पहचान में ही कई सामाजिक ताकतें हैं। उसमें एक भौगोलिक–ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य और पड़ोसी समुदायों के साथ जुड़ाव एक संस्कृति को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है, हालांकि शोधकर्ता के दृष्टिकोण (सांस्कृतिक वितरण के) का एक आरोपित वर्गीकरण, समुदायों के सहयोग से रहित, आलोचना से मुक्त नहीं रह सकता है।

3.4 सारांश

इस इकाई में हमनें संस्कृति क्षेत्र की अवधारणा के विकास के माध्यम से इसके सफर का पता लगाया। हमने देखा कि कैसे इसकी नींव संग्रहालय विज्ञान पर आधारित थी, और नृवंशविज्ञान तथ्य की तार्किक व्यवस्था की आवश्यकता में इसकी कल्पना कैसे की गई। हमने देखा कि इसकी अवधारणा सामाजिक–सांस्कृतिक विकास के विचार से

कैसे ली गई, हालाँकि, यह सांस्कृतिक इतिहास को समझने में नवाचार और प्रसार के विचार से अधिक संबंधित था। इस इकाई में हमनें यह भी देखा कि ब्रिटिश और जर्मन जैसे विभिन्न स्कूलों के विचारों ने इस अवधारणा की दिशा में कैसे योगदान दिया, जिसे अमेरिकी विचारधारा द्वारा प्रभावशाली ढंग से विकसित किया गया था।

3.5 सन्दर्भ

Boas, F. (1896). The limitations of the comparative method Science, 4 (103)' 901-908

(1887). The occurrence of similar inventions in areas widely apart Science, 9 (224),

485-86. (1932).The Aims of Anthropological Research.Science, 76 (1983), 605- 613.

Bock, P. K. (1996).Culture Change.in Levinson, David & Ember, Melvin (ed.) Encyclopedia of Cultural Anthropology.Vol.1. New York: Henry Holt & Co.

Buckley, T. (1989). Kroeber's Theory of Culture Areas and the Ethnology of North-western California Anthropological Quarterly, 62(1), 15-26.

Freed, S.A and Freed, R. S. (1883). Clark Wissler and the Development of Anthropology in the United States American Anthropologist, 85(4), 800-825

Hill, G. W. (1941). "The Use of the Culture-Area Concept in Social Research". American

Journal of Sociology, 47 (1), 39-47.

Janusc, J.B. (1957). "Boas and Mason: Particularism versus Generalization". American

Anthropologist, 59, 318-325

Kroeber, A. L. (1925). "Handbook of the Indians of California." Bureau of American

Ethnology Bulletin, 78,1–995.

(1939). Cultural and Natural Areas of Native North America. Berkley, California:

University of California Press.

Smith, R. G. (1929). "The Concept of the Culture-Area". Social Forces, 7(3), 421-

432.Willey, M. W. (1931). "Some Limitations of the Culture Area Concept". Social Forces, 10 (1), 28-31.

Wissler, C. (1917). The American Indian. New York: Douglas C. McMurtrie.

(1927). "The Culture-Area Concept in Social Anthropology". American Journal

of Sociology, 32 (6), 881-891.

3.6 आपकी प्रगति की जांच करने के लिए उत्तर

1) अनुभाग 3.1.1 देखें ।
2) उत्तर हेतु अनुभाग 3.1.2 का संदर्भ लें।
3) भाग 3.1 का संदर्भ लें।
4) भाग 3.2 का संदर्भ लें ।
5) फ्रोबेनियस
6) *द अमेरिकन इंडियन (1917), मैन एंड कल्चर (1923) और द रिलेशन ऑफ नेचर टू मैन (1926)*।
7) उत्तर के लिए भाग 3.2 का संदर्भ लें।
8) भाग 3.2 का संदर्भ लें
9) भाग 3.2 का संदर्भ लें
10) उत्तर के लिए भाग 3.3 का संदर्भ लें।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY